सामाजिक विज्ञान

अभ्यास पुस्तिका

वेद-भूषण - IV वर्ष / पूर्वमध्यमा - I वर्ष / कक्षा नवीं

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेद संस्कृत शिक्षा बोर्ड

(शिक्षा मन्त्रालय भारत सरकार द्वारा स्थापित एवं मान्यता प्राप्त)

जंबू प्लक्षाह्वयौ द्वीपो शाल्मलश्चापरो द्विज।
कुशः क्रौंचस्तथा शाकः पुष्करश्चैव सप्तमः॥
गिरयस्ते पर्वता हिमवन्तोरण्यं।
वर्षिष्ठः पर्वतानां त्रिककुन्नाम।
अप्स्वन्तरमृतमप्सुभेषजमपामुतप्रशस्तिष्वश्वाभवतव्वाजिनः॥
इमं यवमष्टायोगैः षड्योगेभिरचर्कृषुः।
समदोषः समाग्निश्च समधातुमलक्रियाः।
प्रसन्नात्मेन्द्रिय मनाः स्वस्थ इत्यभिधीयते॥
शौच सन्तोष तपः स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमाः।
अतीतनागते चोभे पितृवंशं च भारत।
तारयेद् वृक्षरोपी च तस्मात् वृक्षांश्च रोपयेत॥

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in

विषयानुक्रमणिका

क्रम संख्या	अध्याय का नाम	पृष्ठ संख्या
	भूगोल	
1	भारत का भौगोलिक स्वरूप	3-7
2	अपवाह तन्त्र	8-10
3	जलवायु	11-13
4	भारत में कृषि	14-16
	इतिहास	
5	समाज का पूर्ण स्वास्थ्य : उसके लिए पारम्परिक उपाय	17-19
6	पारम्परिक क्रीड़ाएँ	20-21
7	फ्रान्स की क्रान्ति (1789 ई.-1799 ई.)	22-24
8	समाजवाद और रूसी क्रान्ति	25-26
9	नात्सीवाद	27-28
10	विश्व युद्ध और भारत	29-31
	राजनीति शास्त्र	
11	लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली	32-33
12	संविधान निर्माण और राजनीतिक संस्थाएँ	34-37
13	भारत में निर्वाचन प्रणाली	38-39
	अर्थशास्त्र	
14	आदर्श ग्राम की परिकल्पना	40-41
15	मानव संसाधन और गरीबी	42-44
16	भारत में खाद्य सुरक्षा	45-46
	परिशिष्ट	47-48

अध्याय-1

भारत का भौगोलिक स्वरूप

- भारत की सीमाएँ प्राकृतिक रूप से उत्तर में विशाल हिमालय, दक्षिण, पूर्व और पश्चिम में विशाल जलनिधि से आवृत होने के कारण चतुर्दिक सुरक्षित है।
- भौगोलिक दृष्टि से भारतीय उपमहाद्वीप विविधता युक्त है। प्राकृतिक रूप से विन्ध्य पर्वतमाला भारत को दो भागों- उत्तरापथ और दक्षिणापथ में विभाजित करती है।
- भारतीय सनातनी संस्कृति विश्व की प्राचीनतम संस्कृतियों में से एक है। हमें इसके साक्ष्य वैदिक वाङ्मय, पुरातात्विक स्रोतों, भू-संरचनाओं आदि से प्राप्त होते हैं। भारत को आर्यावर्त, हिन्दुस्तान और इंडिया नाम से भी जाना जाता है। भारत, विश्व के सबसे प्राचीन भू-भाग गोंडवाना लैंड का हिस्सा है।
- गोंडवाना लैंड में भारत के अतिरिक्त आस्ट्रेलिया, दक्षिणी अफ्रीका, दक्षिणी अमेरीका तथा अण्टार्टिक क्षेत्र सम्मिलित हैं।
- भौतिक रूप से एशिया और यूरोप को यूरेशिया महाद्वीप कहा जाता था। परन्तु आधुनिक भूवेत्ताओं द्वारा दोनों की विभाजक रेखा यूराल पर्वतमाला को न मानने से इन्हें दो महाद्वीप यूरोप और एशिया कहा है।
- महर्षि पतञ्जली ने पृथिवी को सप्तद्वीपा कहा है। **जंबू प्लक्षाह्वयौ द्वीपो शाल्मलश्चापरो द्विज। कुशः क्रौंचस्तथा शाकः पुष्करश्चैव सप्तमः॥** (अग्निपुराण 108.1) अर्थात् जम्बू, प्लक्ष, शाल्मल, कुश, क्रौंच, शाक और पुष्कर द्वीप हैं।
- भारत एक विशाल देश है, जो उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित है। भारत का अक्षांशीय विस्तार 8°4' उत्तर से 37°6' उत्तरी अक्षांश एवं देशांतरीय विस्तार 68°7' पूर्व से 97°25' पूर्वी देशान्तर तक है।
- हमारे देश के मुख्य भू-भाग के दक्षिण-पूर्व में अण्डमान, निकोबार द्वीप समूह (बङ्गाल की खाड़ी) और दक्षिण-पश्चिम में लक्षद्वीप समूह (अरब सागर), उत्तर में हिमालय की विस्तृत पर्वत श्रृँखला एवं दक्षिण में हिन्द महासागर स्थित है।
- भारत का क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व में सातवाँ स्थान है। भारत का क्षेत्रफल लगभग 32.8 लाख वर्ग किलोमीटर है, जो विश्व के क्षेत्रफल का 2.42% भू-भाग है।
- हमारे देश की स्थल सीमा लगभग 15,200 कि.मी. है। भारत की समुद्र तटीय सीमा लगभग 7516.6 कि.मी. (अंडमान-निकोबार तथा लक्षद्वीप समूह) लम्बी है। भारत के उत्तर के भू-भाग चौड़ाई अधिक है और दक्षिण की ओर सँकरा होता जाता है।

- भारत की मानक याम्योत्तर रेखा 82°30' पूर्व देशान्तर रेखा को माना गया है। यह उत्तर प्रदेश के मिर्जापुर से गुजरती है।
- अक्षांश का प्रभाव दक्षिण से उत्तर की ओर दिन और रात की अवधि पर पड़ता है इसलिए गुजरात से अरुणाचल प्रदेश के स्थानीय समय में दो घण्टे का अन्तर है।
- क्षेत्रफल की दृष्टि से भारत का सबसे बड़ा राज्य, राजस्थान और गोवा सबसे छोटा राज्य है।
- गोंडवाना शब्द प्राचीन भारतीय गोंड साम्राज्य से बना है। यह साम्राज्य नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित था। इस क्षेत्र में मिली शिलाओं के अध्ययन के आधार पर ही भू-विज्ञानियों ने इसे गोंडवाना कहा था। ये विशाल भू-भाग पैंजिया महाद्वीप का दक्षिण भाग है।
- हमारे देश में प्राय: सभी प्रकार की भू-आकृतियाँ पाई जाती है, जैसे- पर्वत, मैदान, मरुस्थल, पठार आदि। भारत का प्रायद्वीपीय पठार आग्नेय एवं कायान्तरित शैलों से बना है। यह विश्व के प्राचीनतम भू-भागों में से एक है।
- हिमालय पर्वतमाला विश्व की नवीनतम पर्वत श्रेणी है, इसमें ऊँची-ऊँची पर्वत चोटियाँ, गहरी घाटियाँ और तीव्र वेग वाली नदियाँ अवस्थित हैं।
- भू विज्ञानियों ने भारत की भू आकृतियों को छ: भागों- हिमालय पर्वतीय क्षेत्र, उत्तर का विशाल मैदान, प्रायद्वीपीय पठार, मरुस्थल, तटीय क्षेत्र और द्वीप समूह में विभाजित किया है।
- भारत के अन्तिम उत्तरी सीमा बिन्दु इन्दिरा कोल सियाचीन के पास (लद्दाख) से अन्तिम दक्षिण सीमा बिन्दु इन्दिरा पॉइन्ट कन्या कुमारी (तमिलनाडु) की दूरी 3214 कि.मी. है। इसी प्रकार भारत के अन्तिम पश्चिमी सीमा बिन्दु गौर माता,सरक्रीक (गुजरात) से अन्तिम पूर्वी सीमा बिन्दु किबिथू अरुणाचल प्रदेश की दूरी 2933 कि.मी. है।
- भारत की उत्तरी सीमा पर विश्व की सबसे विस्तृत हिमालय पर्वत श्रृँखला वलयाकार रूप में अवस्थित है। हिमालय पर्वतमाला का पश्चिमोत्तर भाग हिन्दुकुश और त्रिकूट (सुलेमान) पर्वत और पूर्व के भाग को नागा, पतकुई, आराकान पर्वत के नाम से जाना जाता है। यह पर्वत श्रृँखला पश्चिम दिशा में सिन्धु नदी से लेकर पूर्व दिशा में ब्रह्मपुत्र तक फैली हुई है।
- हिमालय पर्वत श्रृँखला की लम्बाई लगभग 2400 कि.मी. है। इसकी पश्चिम (कश्मीर) में चौड़ाई में 400 कि.मी. है, तो पूर्व में (अरूणाचल प्रदेश) में इसकी चौड़ाई लगभग 150 कि.मी. है।
- हिमालय को विस्तार एवं ऊँचाई के आधार पर तीन भागों में विभाजित किया जा सकता है- क. आंतरिक हिमालय ख. मध्य हिमालय ग. शिवालिक श्रेणी।
- हिमालय के सबसे उच्च भाग को हिमाद्री अथवा महान या आंतरिक पर्वत श्रृँखला कहते हैं। इसका आन्तरिक भाग क्रोड ग्रेनाइट से निर्मित है।

- आन्तरिक हिमालय में विश्व का सर्वोच्च पर्वत शिखर माउंट एवरेस्ट (8848 मीटर) नेपाल में स्थित है। कंचनजंघा (8598 मीटर) भारत की सर्वोच्च पर्वत चोटी है।
- महान हिमालय के दक्षिण भाग को मध्य हिमालय या हिमाचल कहते हैं। इस भाग का निर्माण अत्यधिक संपीडित तथा परिवर्तित शैलों से हुआ है।
- मध्य हिमालय की ऊँचाई 3700 मीटर से 4500 मीटर के मध्य तथा चौड़ाई 50 किलोमीटर है। यहाँ की सबसे लम्बी व महत्वपूर्ण पर्वत श्रृँखला पीर पञ्जाल है।
- धौलाधार, महाभारत, कश्मीर घाटी, हिमाचल के कांगड़ा एवं कुल्लू की घाटियाँ, शिमला, मसूरी, नैनीताल, दार्जिलिङ्ग आदि स्थान भी हिमालय के मध्य भाग में स्थित हैं। यह क्षेत्र पर्यटन के लिए विश्व प्रसिद्ध है।
- हिमालय पर्वत की सबसे बाहरी श्रृँखलाओं को शिवालिक श्रेणी कहा जाता है। इनकी औसत ऊँचाई 900 से 1100 मीटर तथा चौड़ाई 10 से 50 किलोमीटर है। इनका निर्माण अवसादी शैलों से हुआ है।
- शिवालिक तथा मध्य हिमालय के बीच स्थित लम्बवत् घाटी के पश्चिम व मध्य भाग को दून एवं पूर्वी भाग को द्वार कहते हैं,जैसे- देहरादून, पाटलीदून, हरिद्वार आदि हैं।
- भारत में हिमालय पर्वत माला को अनेक नामों से जाना जाता है- सतलुज और सिन्धु के मध्य भाग को पञ्जाब हिमालय, सतलुज और काली नदियों के मध्य भाग को कुमाऊं हिमालय, काली व तीस्ता नदियों के मध्य भाग को नेपाल हिमालय और तीस्ता व दिहांग नदियाँ के मध्य भाग को असम हिमालय आदि नामों से जाना जाता है।
- भू-गर्भवेत्ताओं का मानना है कि हिमालय पर्वत मध्य एशिया से आने वाली बर्फीली हवाओं से हमें सुरक्षा प्रदान करता है। यहाँ खनिज पदार्थों के विपुल भण्डार हैं।
- हिमालय पर्वतमाला हमारी संस्कृतियों, सततवाहिनी नदियों, वन्यजीवों, औषधियों, रमणीय स्थलों, फसलों एवं विद्युत उत्पादन आदि की दृष्टि से अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं।
- उत्तर के मैदान का विस्तार लगभग 7 लाख वर्ग किलोमीटर के क्षेत्र में है। इस मैदान की लम्बाई लगभग 2400 किलोमीटर और चौड़ाई 240 से 320 किलोमीटर है।
- उत्तर के मैदान के पश्चिमी भाग को पञ्जाब का मैदान भी कहा जाता है। इस मैदान का निर्माण सिन्धु एवं उसकी सहायक नदियों सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव, झेलम और व्यास नदियों के द्वारा हुआ है।
- मध्यवर्ती मैदान का विस्तार हरियाणा, दिल्ली, उत्तर प्रदेश, बिहार झारखण्ड और पश्चिमी बङ्गाल तक है। इसका ढाल पश्चिम से पूर्व की ओर है और इस क्षेत्र में जलोढ़ मिट्टी पाई जाती है। मध्यवर्ती मैदान की प्रमुख नदियों में गङ्गा, यमुना, घग्घर, तीस्ता और उनकी सहायक नदियाँ हैं।

- पूर्वी मैदान को ब्रह्मपुत्र का मैदान भी कहा जाता है। ब्रह्मपुत्र नदी में स्थित माजोली द्वीप विश्व का सबसे बडा नदी द्वीप है।
- नदियाँ जब पर्वतों से नीचे की ओर आती हैं, तब शिवालिक की ढाल पर चौड़ी पट्टी (8 कि.मी. से 16 कि.मी.) की गुटिका का निक्षेपण करती हैं, जिसे 'भाबर' कहा जाता है।
- ये नदियाँ भाबर क्षेत्र में लुप्त होकर, इसके दक्षिण क्षेत्र में पुनः निकलती है, जिससे यहाँ पर दलदली व नम क्षेत्र का निर्माण होता है, जो 'तराई' कहलाता है। इस क्षेत्र में सघन वन होते हैं इसलिए इसे 'वन्य जीवों का घर' कहा जाता है।
- प्रायद्वीपीय पठार तीन ओर से समुद्र से आवृत है। प्रायद्वीपीय पठार का निर्माण पुराने क्रिस्टलीय, आग्नेय एवं रूपांतरित शैलों से हुआ है और यह गोंडवाना भूमि के टूटने तथा अपवाह के कारण बना है।
- नर्मदा नदी के उत्तर में वह पठारी क्षेत्र, जो मालवा के पठार के अधिकांश भाग में विस्तृत है, उसे मध्य उच्च भूमि कहते हैं। मध्य उच्च भूमि विंध्य श्रेणी, दक्षिण में सतपुडा और उत्तर-पश्चिम में अरावली पर्वत माला से आवृत है। इसके पश्चिम में राजस्थान का मरुस्थल भाग है।
- नर्मदा नदी के दक्षिण में स्थित त्रिभुजाकार आकृति के भू-भाग को दक्षिण के पठार के नाम से जाना जाता है। यह भारत के 8 राज्यों में विस्तृत है।
- दक्षिण के पठार के पूर्व और पश्चिम सीमा को क्रमशः पूर्वी घाट एवं पश्चिमी घाट कहते हैं। पश्चिमी घाट की ऊँचाई पूर्वी घाट से अधिक है। पूर्वी घाट का सबसे ऊंचा स्थान महेन्द्रगिरि पर्वत है।
- पश्चिमी घाट को अनाई मुडी, डोडाबेटा आदि स्थानीय नामों से भी जाना जाता है। इस भू-भाग में सतपुडा, महादेव, कैमूर एवं मैकाल नीलगिरि पर्वत स्थित है।
- मेघालय, कार्बी, एंगलौंग पठार तथा उत्तर कचार पहाड़ी इसी पठार का पूर्वोत्तर भाग है, जो एक भ्रंश द्वारा छोटा नागपुर के पठार को अलग करती है। इसके पश्चिम से पूर्व की ओर गारो, खासी और जयंतिया प्रमुख पहाड़ी श्रृंखलाएँ हैं।
- तीन ओर से जल से घिरे भू-भाग को 'प्रायद्वीप' कहते हैं, जैसे- भारतीय प्रायद्वीप, अलास्का प्रायद्वीप आदि। समुद्र का वह भाग जो तीन ओर स्थल से आवृत हो खाड़ी कहलाता है, जैसे- बङ्गाल की खाड़ी, गल्फ की खाड़ी आदि।
- दो सागरों को जोड़ने वाले सँकरे जलमार्ग को जलसन्धि या जलडमरू मध्य कहते हैं, जैसे पाक जलडमरू मध्य (भारत और श्रीलङ्का को जोड़ता है)।
- भूमि का ऐसा भाग जिस पर न्यूनतम वर्षा के कारण जीवन और वनस्पति बहुत कम मात्रा में होती हैं तथा रेत की अधिकता होती है, मरुस्थल कहलाता है। भारत में अरावली पर्वतमाला के पश्चिमी भाग में स्थित मरुस्थल स्थित भू-भाग को थार का मरुस्थल कहते हैं।

- हमारे देश में दक्षिण के पठार के किनारे सँकरे तटीय मैदान हैं, इन्हें तटीय प्रदेश कहते हैं। ये पश्चिम में अरब सागर से लेकर पूर्व में बङ्गाल की खाड़ी तक फैले हुए हैं।
- पश्चिमी तट अरब सागर और पश्चिमी घाट के बीच में स्थित है। इसके उत्तरी भाग को कोंकण (मुंबई तथा गोवा) मध्य भाग को कन्नड का मैदान और दक्षिण भाग को मालाबार तट कहते हैं।
- पूर्वी तट का मैदान बङ्गाल की खाडी के साथ-साथ विस्तृत है। इसके उत्तरी भाग को उत्तरी सरकार और दक्षिण भाग को कोरोमण्डल तट के नाम से जानते हैं। इस क्षेत्र की नदियाँ डेल्टा का निर्माण करती हैं।
- भारत का लक्षद्वीप केरल के मालाबार तट के पास छोटे प्रवाल द्वीपों का समूह है। 1973 ई. में इसका नाम लक्षद्वीप रखा गया था। यह 32 किमी क्षेत्र में विस्तृत 36 द्वीपों का समूह है।
- अंडमान-निकोबार द्वीप समूह बङ्गाल की खाड़ी में उत्तर से दक्षिण की ओर स्थित है। ये द्वीप समूह बड़ी सङ्ख्या में छोटे-छोटे द्वीपों के रूप में बिखरे हुए हैं। भारत का एकमात्र सक्रिय ज्वालामुखी बैरन, इस द्वीप समूह पर स्थित है।
- नदी द्वारा लाये गये अवसादों से निर्मित त्रिभुजाकार आकृति जहां नदी समुद्र या किसी झील में समाहित होती है, डेल्टा कहलाती है। सुन्दर वन का डेल्टा गङ्गा और ब्रह्मपुत्र नदी के मुहाने पर स्थित है। यहाँ मकर सक्रान्ति पर प्रसिद्ध गङ्गासागर का मेला लगता है।
- भारत की खारे पानी की सबसे बडी चिल्का झील ओडिसा राज्य में महानदी के मुहाने पर स्थित है।
- कम समय तक जीवित रहने वाले सूक्ष्म जीव समूह जिनकी उत्पत्ति गर्म व छिछले जल में होती है और उनसे कैल्शियम कार्बोनेट का स्राव होता रहता है, इन्हें प्रवाल कहते हैं।
- स्वेज नहर (1869 ई.) के निर्माण से भारत और यूरोप की दूरी 7000 कि. मी. कम हो गई थी।
- भारत एशिया महाद्वीप के दक्षिण भाग में स्थित है। भारत को केन्द्रिय स्थिति प्रदान करने वाला हिन्द महासागर है, जो कि भारत को पश्चिम युरोपीय देशों और पूर्वी एशियाई देशों से मिलाता है।
- भारत के उत्तर पश्चिम में पाकिस्तान और अफगानिस्तान, उत्तर में चीन, तिब्बत, नेपाल, भूटान, पूर्व में म्यांमार, बाङ्गलादेश और दक्षिण में श्रीलंका, मालदीव स्थित हैं।

अध्याय- 2

अपवाह तन्त्र

- किसी नदी में मिलने वाली सभी सहायक नदियाँ और उस नदी बेसिन के अन्य लक्षण मिलकर, उस नदी का अपवाह तन्त्र बनाते हैं। वह तन्त्र है, जो किसी नदी को उसके गन्तव्य अथवा समुद्र तक पहुँचाता है, अपवाह तन्त्र कहलाता है।
- किसी नदी एवं उसकी सहायक नदियों द्वारा अपवाहित क्षेत्र को 'अपवाह द्रोणी' कहा जाता है। जब कोई ऊँचा स्थान एक अपवाह द्रोणी को दूसरी द्रोणी से अलग करता है, तो ऐसी भूमि को 'जल विभाजक' कहा जाता है। विश्व का सबसे बड़ा अपवाह द्रोणी अमेजन नदी का है। भारत में सबसे बडा अपवाह तंत्र गंगा द्रोणी है।
- हिमालय से निकलने वाली नदियों में सिन्धु, गङ्गा, यमुना, सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव, झेलम, ब्रह्मपुत्र आदि प्रमुख हैं।
- हिमालयी नदियों का अपवाह क्षेत्र अधिक लम्बा होता है और इनमें अपरदन क्रिया तेज होने के कारण अपने बहाव के साथ बालू एवं गाद (सिल्ट) ले जाती हैं।
- हिमालयी नदियाँ अपने मध्य एवं निचले भागों में विसर्प, गोखुर झील तथा बाढ़ वाले मैदानों में निक्षेपण आकृतियों तथा डेल्टा का निर्माण करती हैं।
- सिन्धु नदी का उद्गम स्थल तिब्बत में मानसरोवर झील के निकट है। इस नदी की लम्बाई लगभग 2880 कि.मी. है। यह नदी पश्चिम की ओर बहती हुई, भारत के लद्दाख क्षेत्र में प्रवेश करती है। यहाँ पर यह एक सुन्दर दर्शनीय गार्ज का निर्माण करती है।
- सिन्धु नदी का एक तिहाई हिस्सा भारत के जम्मू कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, लद्दाख और पञ्जाब प्रदेश में है, शेष भाग पाकिस्तान में हैं और अन्त में यह अरब सागर में समाहित हो जाती है। सिन्धु नदी की जास्कर, हुञ्जा, सतलुज, व्यास, रावी, चिनाव और झेलम सहायक नदियाँ हैं।
- गङ्गा नदी की मुख्य धारा भागीरथी का उद्गम 'गंगोत्री ग्लेशियर' से हुआ है। उत्तराखण्ड राज्य के देवप्रयाग शहर में अलकनन्दा और भागीरथी नदी का सङ्गम होता है और इसके आगे इसे गङ्गा नदी के नाम से जाना जाता है।
- गङ्गा नदी हरिद्वार के पास मैदानी भाग में प्रवेश करती है। गङ्गा नदी की प्रमुख सहायक नदियाँ- यमुना, घाघरा, गण्डक, कोसी आदि हैं। यमुना नदी यमुनोत्री ग्लेशियर से निकलकर गङ्गा के समान्तर बहती है। केन, बेतवा और चम्बल भी गङ्गा एवं यमुना की सहायक नदियाँ हैं।

- प्रयागराज में गङ्गा, यमुना और लुप्त सरस्वती नदी का सङ्गम होता है, जिस कारण इस क्षेत्र को त्रिवेणी सङ्गम कहा जाता है।
- घाघरा, गण्डक, और कोसी के उद्गम स्थल नेपाल में हैं। इन नदियों से भारत के कुछ भू-भाग में प्रत्येक वर्ष बाढ़ आती है और जानमाल की अधिक हानि होती है।
- पश्चिमी बङ्गाल में फरक्का के पास गङ्गा नदी दो भागों में विभाजित हो जाती है। भागीरथी हुगली, जो दक्षिण की ओर बहती है और डेल्टा के मैदान से बङ्गाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है। गङ्गा नदी की दूसरी मुख्य धारा बांग्लादेश में प्रवेश कर जाती है और यहाँ गङ्गा में ब्रह्मपुत्र नदी आकर मिलती है।
- ब्रह्मपुत्र नदी का उद्गम स्थल कैलाश पर्वत एवं मानसरोवर झील के निकट तिब्बत में है। यद्यपि ब्रह्मपुत्र नदी की लम्बाई, सिन्धु नदी (2900 कि.मी.) से कुछ अधिक है।
- ब्रह्मपुत्र नदी को तिब्बत में साँगपो, बाङ्गलादेश में जमुना, अरूणाचल प्रदेश में दिहाँग और असम में ब्रह्मपुत्र के नाम से जाना जाता है। इसकी सहायक नदियाँ दिबांग, लोहित, धनश्री, कालांग आदि हैं।
- प्रायद्वीपीय भारत की अधिकाशं नदियाँ पश्चिमी घाट से निकलती हैं और बङ्गाल की खाड़ी में समाहित होती हैं। परन्तु नर्मदा और ताप्ती नदियों की उत्पत्ति केन्द्रिय उच्च भूमि से हुई है। अत: ये नदियाँ पश्चिम की ओर बहती हुई ज्वारनद का निर्माण करती हुई अरब सागर में मिलती हैं।
- प्राचीनकाल में नर्मदा नदी को 'रेवा' के नाम से जानते थे। स्कन्द पुराण के रेवा खण्ड में में इसकी उत्पत्ति एवं महिमा का वर्णन किया गया है। नर्मदा नदी का उद्गम मध्यप्रदेश में अमरकंटक की पहाड़ी से हुआ है। इस नदी की कुल लम्बाई 1312 कि.मी. है।
- नर्मदा नदी मध्यप्रदेश और गुजरात में अनेक दार्शनिक स्थलों का निर्माण करते हुए, खम्भात की खाडी (अरब सागर) में समाहित हो जाती है। नर्मदा नदी गहरे गार्जों (V आकार की घाटी) जैसे- जबलपुर में 'धुंआधार जल प्रपात' का निर्माण करती है। मध्यप्रदेश सरकार द्वारा 2016 ई. में नर्मदा नदी के संरक्षण के लिए 'नमामि देवी नर्मदे' योजना प्रारम्भ की है।
- ताप्ती नदी का उद्गम मध्यप्रदेश के बैतुल जिले में मुलताई नामक स्थान से हुआ है। इस नदी की लम्बाई 724 कि.मी. है। ताप्ती नदी का तटीय मैदान बहुत सँकरा है। यह नदी सतपुड़ा पर्वत श्रेणी से निकलकर मध्यप्रदेश, महाराष्ट्र और गुजरात से बहती हुई अरब सागर में मिल जाती है।
- गोदावरी नदी नासिक के पास पश्चिमी घाट से निकलकर महाराष्ट्र, कर्नाटक, तेलंगाना तथा आंध्रप्रदेश में प्रवाहित होती हुई बङ्गाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है। इसकी कुल लम्बाई 1465 कि. मी. है। यह प्रायद्वीपीय नदियों में सबसे बड़ी है, इसलिए इसे दक्षिण की गङ्गा कहते हैं।
- महानदी का उद्गम स्थल छत्तीसगढ में सिहावा नामक स्थान है। महानदी की कुल लम्बाई 860 कि.मी. है। इसी नदी पर हीरा कुण्ड बांध का निर्माण किया गया है। इस महानदी का अपवाह तन्त्र महाराष्ट्र छत्तीसगढ, झारखण्ड और ओडिशा में है। अन्त में महानदी बङ्गाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है।

- कृष्णा नदी का उद्गम महाराष्ट्र के महाबलेश्वर के पास से हुआ है। यह नदी महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा आंध्रप्रदेश राज्यों में से प्रवाहित होती हुई, 1400 किमी की दूरी तय करते हुए, बङ्गाल की खाड़ी में समाहित हो जाती है।
- कृष्णा नदी की सहायक नदियाँ कोयना, पञ्चगङ्गा, मालप्रभा, घाटप्रभा, भीमा, मूसी और तुंगभद्रा है। कृष्णा नदी पर नागार्जुन सागर बाँध (तेलंगाना) और अलमाटी सागर बाँध (कर्नाटक) प्रमुख हैं।
- कावेरी नदी अपने उद्गम स्थल कुर्ग की ब्रह्मगिरि पहाडी से निकलकर लगभग 760 किमी बहती हुई, तमिलनाडु राज्य के कुडलूर के निकट बङ्गाल की खाडी में विलुप्त हो जाती है। कावेरी नदी की सहायक नदियाँ अमरावती, भवानी, हेमावती तथा काबिनी है।
- कावेरी नदी पर भारत का दूसरा सबसे बड़ा जलप्रपात 'शिवसमुन्दरम्' है, जिससे जल विद्युत का उत्पादन कर कोलार की स्वर्ण खानों के लिए विद्युत आपूर्ति की जाती है।
- पृथिवी के धरातल पर स्थित ऐसे प्राकृतिक गड्ढे, जो जल से भरे हुए हों, झील कहलाते हैं। भारत में आकार व लक्षणों के आधार पर अनेक प्रकार की झीलें पाई जाती हैं।
- सांभर झील (राजस्थान) खारे जल की भारत की सबसे बड़ी प्राकृतिक झील है। इसके जल का उपयोग नमक उत्पादन में होता है।
- भारत में मीठे जल की अधिकतर झीलें का निर्माण हिमालयी क्षेत्र में बर्फ के पिघलने से हुआ है। 'वूलर झील' (कश्मीर) मीठे जल की सबसे बड़ी झील है। इसका निर्माण भूगर्भीय क्रियाओं से हुआ है।
- बड़े आकार वाली झीलों को सागर भी कहा जाता है, जैसे- केस्पियन सागर, अरब सागर और मृत सागर आदि।
- भारत का सबसे बड़ा जल प्रपात जोग है, जो शरावती नदी पर कर्नाटक राज्य में है।
- राजस्थान के उदयपुर शहर को झीलों की नगरी कहते हैं।
- नदियों के किनारे स्थित शहरों, घाटों, दार्शनिक स्थलों, धार्मिक स्थलों को देखने के लिए पर्यटक आते हैं, जिससे हम आर्थिक रूप से लाभान्वित होते हैं। ऋषिकेश की नौका सञ्चालन (राफ्टिंग), वाराणसी के घाटों की गङ्गा आरती, कुंभ एवं अन्य सांस्कृतिक मेलों के आयोजन आदि वृहद रूप से पर्यटन क्षेत्र एवं अर्थव्यवस्था में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

अध्याय- 3

जलवायु

- किसी विशाल भू-भाग में लम्बी समयावधि (30 वर्ष से अधिक) की मौसम की अवस्थिति और भिन्नताओं के योग को 'जलवायु' कहते हैं।
- जलवायु किसी देश के प्राकृतिक संसाधनों के अतिरिक्त वहाँ की आर्थिक, सामाजिक एवं सांस्कृतिक सभ्यताओं को भी विशेष रूप से प्रभावित करती है।
- भारत की भौगोलिक भिन्नताओं के परिणामस्वरूप यहाँ जलवायु की भिन्न-भिन्न अवस्थाएँ पाई जाती हैं, इसीलिए भारत की जलवायु, मानसूनी जलवायु कहलाती है।
- मानसून शब्द की उत्पत्ति अरबी भाषा के 'मौसिम' शब्द से हुई है, जिसका अर्थ मौसम होता है। एक वर्ष की अवधि के दौरान वायु की दिशा में ऋतु के अनुसार परिवर्तन होना ही 'मानसून' कहलाता है।
- किसी भी क्षेत्र की जलवायु को नियंत्रित करने वाले प्रमुख कारक हैं- 1.अक्षांश 2.ऊँचाई. 3.वायुदाव और पवन तन्त्र 4. समुद्र से दूरी 5. महासागरीय धाराएँ 6. उच्चावच।
- पृथिवी की वृताकार स्थिति के कारण यहाँ प्राप्त सौर ऊर्जा की मात्रा अंक्षाशों पर भिन्न-भिन्न होती है, जिसके कारण तापमान विषुवत वृत से ध्रुवों की ओर घटता है।
- पृथिवी की सतह से ऊँचाई की ओर जाने पर वायु मण्डल की सघनता में कमी होने के कारण तापमान भी घट जाता है, इसलिए पहाड़ियाँ ग्रीष्म ऋतु में भी ठण्डी होती हैं।
- किसी क्षेत्र का वायुदाब और पवन तन्त्र वहाँ के अक्षांश तथा ऊँचाई पर निर्भर करता है। अत: यह तापमान और वर्षा के वितरण को प्रभावित करता है।
- समुद्र का जलवायु पर प्रभाव समान होता है, जैसे-जैसे समुद्र से दूरी बढ़ती है, यह प्रभाव भी कम होता जाता है।
- समुद्र से तट की ओर चलने वाली मौसमीय हवाएँ को 'महासागरीय धाराएँ' कहते हैं। ये धाराएँ तटीय क्षेत्र की जलवायु को प्रभावित करती है।
- उच्चावच किसी क्षेत्र की जलवायु निर्धारण में उच्चावच की भूमिका प्रमुख होती है। ऊँची पर्वतमालाओं से ठण्डी या गर्म वायु में अवरोध होता है।
- भारत एशिया के दक्षिणी भाग में स्थित है। कर्क रेखा इसके मध्य से होकर गुजरती है। अत: भारत की इस विशिष्ट स्थिति के कारण दक्षिणी भाग में उष्ण कटिबन्धीय जलवायु और उत्तरी भाग में उपोष्ण कटिबंधीय जलवायु पाई जाती है।

- भारत के उत्तर में विशाल हिमालय पर्वत स्थित है, जो शीत ऋतु में उत्तर दिशा से आने वाली बर्फीली हवाओं को रोककर भारत को ठण्ड से बचाता है। इस पर्वत के कारण ही भारत में मध्य एशिया की तुलना में कम सर्दी पड़ती है।
- भारत में मौसमी अवस्था व जलवायु, तीन वायुमंडलीय स्थितियों से प्रभावित होती है- 1.धरातलीय पवनें और वायुदाब 2.ऊपरी वायु परिसंचरण 3.पश्चिमी चक्रवाती विक्षोभ एवं उष्ण कटिबंधीय चक्रवात।
- भारत में उत्तरी गोलार्द्ध में उत्पन्न होने वाली उत्तरी-पूर्वी व्यापारिक पवनें चलती हैं। ये शुष्क पवनें दक्षिण की ओर बहती हैं। परन्तु 'कोरिआलिस बल' के कारण निम्न दाब वाले क्षेत्रों की ओर बहती हैं।
- पृथिवी के घूर्णन के कारण उत्पन्न आभासी बल को 'कोरिआलिस बल' या फेरेल का नियम कहते हैं।
- 27-30 डिग्री उत्तरी अक्षांशों में स्थित वायु धाराओं को 'उपोष्ण कटिबंधीय पश्चिमी जेट धाराएँ' कहते हैं। भारत में ये पवनें ग्रीष्म ऋतु को छोडकर पूरे वर्ष हिमालय के दक्षिण क्षेत्र में प्रवाहित होती हैं। इसी प्रवाह के कारण देश के उत्तर एवं उत्तर-पश्चिम भाग में विक्षोभ आते हैं।
- भारत की जलवायु दो मौसमी हवाओं से उत्तर-पूर्वी मानसून और दक्षिण-पश्चिमी मानसून प्रभावित होती है। उत्तर-पूर्वी मानसून को आमतौर पर शीतकालीन मानसून कहा जाता है, जिसमें हवाएँ जमीन से समुद्र की ओर चलती हैं।
- दक्षिण-पश्चिम मानसून ग्रीष्मकालीन मानसून है, जिसमें हवाएँ हिंद महासागर, अरब सागर और बङ्गाल की खाड़ी से होते हुए धरातल की ओर बहती हैं। इस मानसून से देश में सर्वाधिक वर्षा होती है।
- मानसूनी पवनें नियमित नहीं होती हैं। इनकी प्रकृति स्पन्दमान होती है। इसके आगमन से अचानक अत्यधिक वर्षा लगातार कई दिनों तक होती रहती है, जिसे मानसून का फटना कहते हैं।
- भारत में मानसून का आगमन जून माह के प्रथम सप्ताह में भारत के दक्षिण छोर (केरल) से होता है।
- हमारे वैदिक वाङ्मय के अनुसार ऋतुओं की सङ्ख्या छः मानी गयी है- वसन्त, ग्रीष्म, वर्षा, शरद, हेमन्त, शिशिर। ऋतु परिवर्तन का प्रमुख कारण पृथिवी द्वारा सूर्य के चारों ओर परिक्रमण तथा पृथिवी का अक्षीय झुकाव है। इस प्रकार ऋतु चक्र निरन्तर चलता रहता है।
- शीत ऋतु का काल मध्य नवम्बर से फरवरी तक माना जाता है। इस समय सूर्य की स्थिति दक्षिणायन हो जाती है। इस कारण उत्तरी गोलार्द्ध में स्थित भारत का तापमान कम हो जाता है।
- शीतऋतु में भूमध्य सागर से उठने वाला शीतोष्ण चक्रवात 'पश्चिम जेट स्ट्रीम' के सहारे भारत में प्रवेश करता है, जिसे 'पश्चिमी विक्षोभ' कहते हैं। यह पञ्जाब, हरियाणा, राजस्थान, पश्चिमी उत्तर प्रदेश, हिमाचल प्रदेश एवं जम्मू कश्मीर में वर्षा करता है, जिसे 'मावट' भी कहते हैं।

- ग्रीष्म ऋतु, मार्च से मई माह तक रहती है। इस समय भारत में तापमान बढ़ोत्तरी होती है। ग्रीष्म ऋतु में उत्तर तथा उत्तर-पश्चिमी भारत में दिन के समय तेज, गर्म एवं शुष्क हवाएँ चलती है, जिन्हें राजस्थान में 'लू' कहा जाता है।
- ग्रीष्म ऋतु में शुष्क एवं गर्म पवन जब समुद्री आर्द्र पवनों से मिलती है, तो उन स्थानों पर प्रचण्ड तूफान की उत्पत्ति होती है, जिसे मानसूनी चक्रवात कहते हैं।
- भारत के उत्तर-पश्चिम क्षेत्र में बढ़ते तापमान के फलस्वरूप शीत ऋतुकालीन उच्च वायुदाब इस समय अत्यन्त निम्न वायुदाब में परिवर्तित हो जाता है, जिसके प्रभाव से बङ्गाल की खाड़ी और अरब सागर की वायु आर्द्र होकर दक्षिण गोलार्द्ध की ओर से आने वाली व्यापारिक पवनों के साथ मिलकर मानसून का निर्माण करती हैं।
- दक्षिण से उत्तर की ओर बढता हुआ मानसून, जून के प्रथम सप्ताह से जुलाई के प्रथम सप्ताह तक देश के अधिकांश क्षेत्रों में वर्षा का कारक बनता है।
- मानसून के निवर्तन का प्रारम्भ सितम्बर माह के प्रथम सप्ताह से होने लगता है। मानसून सर्वप्रथम उत्तर-पश्चिमी भारत से वापस लौटने लगता है। मध्य सितम्बर तक यह राजस्थान, उत्तर-पूर्वी मध्य प्रदेश, पञ्जाब, हरियाणा आदि राज्यों से वापस लौट जाता है।
- विश्व का सर्वाधिक वर्षा वाला स्थान मासिनराम है, जो भारत के मेघालय राज्य में है।
- भारत में सम्पूर्ण वर्षा का 75 % दक्षिणी पश्चिमी मानसून से वर्षा ऋतु में, 10% ग्रीष्म ऋतु में, 13% मानसून वापसी की ऋतु में तथा 2% वर्षा शीत काल में होती है।

अध्याय- 4

भारत में कृषि

- ऋग्वेद में उपदेशित किया गया है- "अक्षैर्मा दीव्यः कृषिमित् कृषस्व वित्ते रमस्व बहु मन्यमानः।" (10.34.13) अर्थात् हे मानव! जुआ खेलना छोड़कर, खेती की कला सीखनी चाहिए।
- ऋग्वेद, अथर्ववेद, और भागवत व ब्रह्माण्ड आदि पुराणों से ज्ञात होता है कि राजा पृथु कृषि के जनक हैं। अथर्ववेद में संकेत किया गया है- **"तां पृथी वैन्यो ऽधोक्तां कृषिं च सस्यं चाधोक।"** (8.10.42) अर्थात् राजा पृथु ने सर्वप्रथम कृषि विद्या के द्वारा अन्नों के उत्पादन का रहस्य ज्ञात किया था।
- महर्षि वशिष्ठ के पौत्र पराशर ऋषि कृत 'कृषि पराशर' रचना काफी प्रसिद्ध है। इस ग्रन्थ में कृषि के सिद्धान्त, जैविक खेती और टिकाऊ खेती आदि का उल्लेख हुआ है।
- बारिश को योजन और अंगुल से मापने का वर्णन मिलता है- **"अथ जलाढक निर्णयः शतयोजनविस्तीर्णं त्रिंशद्योजनमुच्छ्रितम्। अधिकस्य भवेन्मानं मुनिभिः परिकीर्तितः॥"** अर्थात् पूर्व में ऋषियों द्वारा वर्षा का मापन की विधि निश्चित किया गया था।
- वर्तमान भारतीय कृषि व्यवस्था पारम्परिक कृषि के आधार पर विकसित हुई है। आज भी हमारे देश की लगभग 64% जनसङ्ख्या की आजीविका का साधन कृषि है। कृषि एवं सम्बन्धित उत्पादों का भारत के सकल घरेलू उत्पादों में लगभग 17.8% (2019-20 में) योगदान है।
- कृषि एक प्राथमिक क्रिया है, जिसके द्वारा हमारे लिए खाद्यान्न उत्पन्न किये जाते हैं। कृषि के द्वारा खाद्यान्न के अलावा उद्योगों को कच्चा माल भी उपलब्ध करवाया जाता है।
- भौगोलिक दशाओं, उत्पाद की मांग, श्रम एवं तकनीकी आधार पर कृषि को मुख्यतः तीन वर्गों में वर्गीकृत किया जा सकता है- 1.जीवन निर्वाह कृषि 2.गहन जीविका कृषि 3.वाणिज्यिक कृषि।
- परिवार या समुदाय के सदस्यों द्वारा जीवन भरण-पोषण के उद्देश्य से की जाने वाली कृषि को जीवन निर्वाह कृषि कहते हैं। इसमें मानव श्रम अधिक तथा मशीनी उपकरणों का न्यूनतम प्रयोग होता है।
- सघन आबादी वाले क्षेत्रों में बड़े भू-भाग पर की जाने वाली कृषि जिसमें गहन श्रम के साथ अधिक उत्पादन के लिए अधिक रासायनिक उर्वरकों एवं कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है, उसे गहन जीविका कृषि कहते हैं।
- भारत के बड़े भू-भागों पर नकदी प्राप्त करने के उद्देश्य से की जाने वाली कृषि को वाणिज्यिक कृषि कहते हैं। इस कृषि में रासायनिक उर्वरकों, कीटनाशकों एवं मशीनों का प्रयोग बहुतायत से किया जाता है। गन्ना, चाय, कॉफी, रबड़, कपास आदि वाणिज्यिक फसलें है।
- एक विस्तृत भू-भाग में पौधों का वह समूह, जो भोजन की आपूर्ति के साथ आर्थिक लाभ की दृष्टि से बड़े पैमाने पर उत्पादित किया जाता है,'फसल' कहलाता है।

- रबी की फसलें अक्टूबर-नवम्बर माह में बो कर मार्च-अप्रैल माह तक काट ली जाती हैं। रबी की प्रमुख फसलों में गेहूँ, चना, मटर, सरसों, धनिया आदि हैं।
- खरीफ के फसलों की बुआई जून-जुलाई माह में कर अक्टूबर-नवम्बर माह तक काट ली जाती हैं। खरीफ की प्रमुख फसलें धान, मक्का, ज्वार, बाजरा, उड़द, जूट, मूंगफली आदि हैं।
- जायद की फसलों में मुख्यतः सब्जियों का उत्पादन होता है, जिनकी बुआई मार्च में जून में काट ली जाती हैं। जायद की प्रमुख फसलें तरबूज, खरबूज, खीरा, ककड़ी, जानवरों के चारे आदि हैं।
- वे फसलें जिनका उपयोग खाने या भोजन के रूप में किया जाता है, उन्हें खाद्यान्न फसल कहते हैं। जैसे- जौ, चावल, गेहूँ, मक्का, ज्वार, बाजरा आदि।
- वे फसलें जिनका उपयोग व्यावसायिक कार्यों के लिए में कच्चे माल के रूप में किया जाता है, उन्हें व्यवसायिक फसलें कहते हैं, जैसे- गन्ना, कपास, जूट, तम्बाकू, तिलहन आदि।
- वे फसलें जिन्हें बड़े-बड़े बागानों में उत्पादित किया जाता है, उन्हें बागानी फसलें कहते हैं। जैसे- चाय, कॉफी, रबड़, गर्म मसाले, सिनकोना आदि।
- भूमि मापने की मानक इकाई हेक्टेयर है। 1 हेक्टेयर= 100 वर्गमीटर x 100 वर्गमीटर होता है। कृषि में उत्पादन के कारक भूमि, श्रम, भौतिक और मानव पूँजी होते हैं। भौतिक पूँजी को स्थायी (कृषि उपकरण) और कार्यशील पूँजी (कच्चा माल और नकद रूपये) में विभाजित किया जाता है।
- एक वर्ष में किसी भूमि पर एक से अधिक फसल पैदा करने की प्रविधि को बहुविध फसल प्रणाली कहते हैं। कृषि में उपज बढ़ाने के लिए प्रयुक्त रसायनों को उर्वरक कहते हैं। भारत में रासायनिक खाद का सबसे अधिक प्रयोग पञ्जाब में होता है। वनस्पतियों में पोषण और विकास के काम आने वाले जैव पदार्थों को जैविक खाद कहते हैं, इसका निर्माण जैव अपघटन से होता है।
- भारत विश्व में 21% चावल उत्पादन के साथ चीन के पश्चात दूसरा सबसे बड़ा चावल उत्पादक देश है। चावल का सर्वाधिक उत्पादक राज्य पश्चिम बङ्गाल है, इसके अतिरिक्त आन्ध्रप्रदेश, उत्तरप्रदेश, उड़ीसा, तमिलनाडु, मध्यप्रदेश, बिहार, असाम, छत्तीसगढ़, झारखण्ड, महाराष्ट्र व पञ्जाब आदि में उत्पादित किया जाता है। वेदों में चावल (व्रीहि) की पाँच प्रजातियों- कृष्ण व्रीहि, आशु व्रीहि, महा व्रीहि, शुक्ल व्रीही और हायन का उल्लेख हुआ है।
- गेहूँ उत्पादन में भारत का विश्व में चीन व अमेरिका के पश्चात तीसरा स्थान है। गेहूँ रबी की प्रमुख फसल है और देश की कुल कृषि योग्य भूमि की लगभग 10% भूमि पर गेहूँ की कृषि की जाती है। गेहूँ उत्पादन में भारत में उत्तरप्रदेश प्रथम स्थान पर तथा पञ्जाब द्वितीय स्थान पर है। इसके अतिरिक्त हरियाणा, बिहार, मध्यप्रदेश तथा राजस्थान गेहूँ उत्पादक प्रमुख राज्य हैं।
- भारत में ज्वार उत्पादन में महाराष्ट्र का प्रथम स्थान है। इसके अलावा आन्ध्रप्रदेश, तमिलनाडु, उत्तरप्रदेश, गुजरात, कर्नाटक तथा मध्यप्रदेश प्रमुख ज्वार उत्पादक राज्य हैं।

- मूंगफली उत्पादन में भारत में गुजरात का प्रथम स्थान है, जो देश की 85% मूंगफली उत्पादित करता है। आंध्रप्रदेश, तमिलनाडु, महाराष्ट्र, कर्नाटक तथा राजस्थान मूंगफली उत्पादक मुख्य राज्य हैं। मूंगफली ब्राजील मूल की फसल है।
- भारत का विश्व में गन्ना उत्पादन में ब्राजील के पश्चात दूसरा स्थान है। उत्तरप्रदेश में देश का 35% गन्ना उत्पादित होता है। महाराष्ट्र, तमिलनाडु, कर्नाटक, पञ्जाब, हरियाणा तथा राजस्थान मुख्य गन्ना उत्पादक राज्य है। गन्ना भारतीय मूल का पौधा है तथा यह एक वाणिज्यिक फसल है।
- विश्व में भारत का कपास उत्पादन में तीसरा स्थान है। भारत में कपास उत्पादन की दृष्टि से गुजरात का प्रथम, महाराष्ट्र का द्वितीय व आन्ध्रप्रदेश का तृतीय स्थान है।
- चाय एक महत्त्वपूर्ण बागानी फसल है, जिसका 1834 ई. में अंग्रेजों द्वारा भारत में परीक्षण की दृष्टि से उत्पादन किया गया था।
- विश्व में चाय उत्पादन में भारत का चीन के पश्चात दूसरा स्थान है। भारत में चाय उत्पादन की दृष्टि से असम का प्रथम स्थान है। पश्चिम बङ्गाल, तमिलनाडु, केरल, हिमाचल प्रदेश, मेघालय, उत्तराखण्ड, त्रिपुरा आदि चाय उत्पादक प्रमुख राज्य हैं।
- भारत में रबर के पौधे सर्वप्रथम केरल में पेरियार नदी के किनारे लगाये गए थे। केरल, कर्नाटक, तमिलनाडु आदि रबर उत्पादक प्रमुख राज्य है।
- वेदों के अतिरिक्त अन्य प्राचीन ग्रंथ जैसे- ऋषि सुरपाल रचित वृक्षायुर्वेद, वराहमिहिर की वृहत संहिता, मनुस्मृति, नारद स्मृति, विष्णु धर्मोत्तर, अग्नि पुराण, कृषि पराशर, कौटिल्य का अर्थ शास्त्र, कृषि गीता इत्यादि में कृषि का विवरण प्राप्त होता है।
- कृषि के इतिहास का संक्षिप्त वर्णन मोहन देव बोस ने अपनी पुस्तक 'A concise history of science in India' में भी किया है।

अध्याय- 5

समाज का पूर्ण स्वास्थ्य : उसके लिए पारम्परिक उपाय

- शास्त्रों में उल्लेख है- "न ही बलहीनेन लभ्यते अयं आत्म" अर्थात् कमजोर और बलहीन व्यक्ति को आत्मज्ञान प्राप्त नहीं हो सकता है। सम्पूर्ण स्वास्थ्य का अर्थ तन और मन के स्वस्थ्य होने से है।
- जिस व्यक्ति के शरीर में दोष (वात, कफ, पित्त) समान हों, अग्नि (देहाग्नि एवं जठराग्नि) सम्यक् हो, सात धातुएँ (रस, रक्त, मांस, मेदा, अस्थि, मज्जा, शुक्र), मल (मल, स्वेद, केश, लोम आदि) समुचित हो तथा सभी शारीरिक क्रियाएँ सम अर्थात् सन्तुलित एवं सुचारू हों और आत्मा, दस इन्द्रियाँ (पाञ्च ज्ञानेन्द्रियाँ और पाञ्च कर्मेन्द्रियाँ) तथा मन प्रसन्न, निर्विकार निर्मल एवं आनन्दित-अवस्था में हो, वह व्यक्ति 'स्वस्थ' कहलाता है।
- "दोषधातुमलमुलं हि शरीरम्॥" (सुश्रत संहिता 15.3) अर्थात्- दोष, धातु एवं मल के समन्वय से ही शरीर बना है। इनके सम रहने से ही शरीर स्वस्थ रहता है, एवं इनके विषम होने से ही शरीर में रोग उत्पन्न होता है।
- विश्व स्वास्थ्य सङ्गठन (WHO) के अनुसार- स्वास्थ्य का अर्थ केवल शरीर में रोगों एवं व्याधियों का अनुपस्थित होना ही नहीं, बल्कि शारीरिक, मानसिक, सामाजिक एवम् आध्यात्मिक चारों स्तरों में निर्विकारता एवम् आनन्द की स्थिति से है।
- सम्पूर्ण स्वास्थ्य रहने के पारम्परिक उपायों में आयुर्वेद, अष्टाङ्ग योग, सूर्य नमस्कार, पञ्चकर्म, षट्कर्म, आदि हैं। व्यक्ति को इन्हें अपनी जीवनचर्या का अङ्ग बनाकर इनका अनुसरण करना चाहिए।
- स्वास्थ्य संरक्षण एवं रोगनिदान हेतु समर्पित ज्ञानराशि 'आयुर्वेद' को ऋग्वेद का उपवेद माना जाता है। ईसा की दूसरी सदी में भारत में आयुर्वेद के दो महान विद्वान सुश्रुतु और चरक हुए थे।
- सुश्रुत संहिता में मोतियाबिन्द, पथरी आदि रोगों का शल्योपचार और शल्य क्रिया के 121 उपकरणों का उल्लेख किया गया है।
- चरक संहिता भारतीय चिकित्साशास्त्र का विश्वकोश है, जिसमें ज्वर, कुष्ठ, मिर्गी और यक्ष्मा के अनेक भेदों का वर्णन है। चरक संहिता में पेड़-पौधों का भी वर्णन है, जिनका प्रयोग औषधि के रूप में होता है।
- योग, श्रेष्ठतम स्वास्थ्य विज्ञान है। योग का शाब्दिक अर्थ है- जोड़ना, मिलाना, संयोजित करना या एकाकार करना। यौगिक क्रियाओं से तन और मन, क्रिया और सिद्धि, कर्म एवं ज्ञान, जीव एवं ईश्वर का सम्बन्ध जोड़ने का अभ्यास किया जाता है।

- हमारे माननीय प्रधानमन्त्री श्री नरेन्द्र दामोदर दास मोदी के सतत् प्रयासों के द्वारा संयुक्त राष्ट्र संघ ने 21 जून, 2014 को अन्ताराष्ट्रीय योग दिवस घोषित किया है। इसलिए हम प्रतिवर्ष 21 जून को योग दिवस मनाते हैं।
- पतञ्जलि द्वारा प्रणीत 'योग दर्शन' में चार पाद हैं- 1. समाधिपाद 2. साधन पाद 3.विभूति पाद 4.कैवल्य पाद। इन चारों पादों में 195 मन्त्र हैं। महर्षि पतञ्जलि ने योग के आठ अङ्ग बताए हैं- 1. यम 2. नियम 3. आसन 4. प्राणायाम 5. प्रत्याहार 6. धारणा 7. ध्यान 8. समाधि।
- यम का तात्पर्य आत्म नियमन, नियन्त्रण या अनुशासन से है। महर्षि पतंजलि के अनुसार "अहिंसा सत्यमस्तेय ब्रह्मचर्यापरिग्रहा: यमा:" अर्थात् अहिंसा, सत्य, अस्तेय (चोरी न करना), ब्रह्मचर्य और अपरिग्रह (संग्रह न करना) यम हैं।
- नियमों का सम्बन्ध शरीर की आन्तरिक शुद्धि से है। "शौच सन्तोष तप: स्वाध्यायेश्वरप्रणिधानानि नियमा:" अर्थात् शौच, तप, सन्तोष, स्वाध्याय और ईश्वर प्रणिधान नियम हैं।
- योग विज्ञान में आसन से आशय, विभिन्न अङ्गों की ऐसी विशिष्ट स्थितियों से है, जो सुखपूर्वक स्थिर बैठने, ध्यान लगाने एवं स्वास्थ्य की दृष्टि से शरीर के लिए अत्यन्त महत्वपूर्ण हो। सामान्यत: आसन 84 प्रकार के होते हैं।
- प्राणायाम शब्द, दो शब्दों प्राण और आयाम से मिलकर बना है। प्राण से आशय शरीर में विचरण करने वाले पंच- प्राण, अपान, समान, उदान और व्यान से है। आयाम से आशय नियन्त्रण, नियमन एवं विस्तारण आदि से है। प्राणायाम में तीन प्रकार की क्रियाएँ होती हैं- 1. पूरक 2. रेचक 3. कुम्भक।
- भस्त्रिका, भ्रामरी, कपालभाति, अनुलोम, विलोम, नाड़ी शोधन, उज्जायी, सीत्कारी, शीतली, प्लावनी और सूर्य भेदी आदि प्रमुख प्राणायाम हैं।
- इन्द्रिय निग्रह को प्रत्याहार कहते हैं। 'तत: परमा वश्यतेन्द्रियाणाम्' अर्थात् प्रत्यहार द्वारा इन्द्रियों को नियंत्रितकर, मन को स्थिर किया जाता है।
- प्रत्याहार द्वारा वश में किए गए चित्त या मन को किसी विषय विशेष में लगाना धारणा कहलाता है। धारणा एक सकारात्मक क्रिया है।
- धारणा के स्थान और विषय वस्तु में चित्तवृत्ति का अखण्ड प्रवाह होना तथा मन का निर्विषय होना ध्यान कहलाता है।
- जब चित्त में ध्याता,ध्यान और ध्येय की त्रिपुटी नहीं रहती है और चित्त ध्येय में ही लीन हो जाए, उसे 'समाधि' कहते हैं।

- आसन को दृढ करने, ध्यान को स्थिर करने तथा कुडलिनी शक्ति को जागृत करने वाले अनुशासन परक उपायों को बन्ध कहा जाता है। बन्ध तीन होते हैं- मूलबन्ध, उड्डयान बन्ध और जालन्धर बन्ध।
- योग शास्त्र में आसन की सहायक क्रियाओं को मुद्रा कहते हैं। योगाचार्यों ने इनकी संख्या 18 बताई है- महामुद्रा, नभोमुद्रा, महावेध, विपरीतकरणी, ताड़न, परिचालन, शक्तिचालनी, खेचरी, व्रजोली, योनी मुद्रा, तड़ागी, माण्डवी, शाम्भवी, अश्वनी, पाशनी, काकी, मातङ्गी और भुजंगनी हैं।
- सूर्यनमस्कार से तात्पर्य है- भगवान् सूर्य के प्रति नमन एवम् आदर का भाव। वैदिकयुग के महान् ऋषि-मुनियों के द्वारा ही हमें सूर्योपासना की परम्परा प्राप्त हुई है। वेदों में सूर्य को सम्पूर्ण सृष्टि के प्राण एवं जीवन-शक्ति बताया गया है।
- सूर्यनमस्कार करने से शारीरिक एवं मानसिक क्लेशों का नाश होता है तथा मनुष्य आध्यात्मिक-उन्नति को प्राप्त होता है। "आदित्यस्य नमस्कारान्, ये कुर्वन्ति दिने दिने। आयुः प्रज्ञा बलं वीर्यं, तेजस्तेषां च जायते॥" अर्थात् जो प्रतिदिन आदित्य (सूर्य) नमस्कार करते हैं, उन्हें दीर्घायु, श्रेष्ठ प्रज्ञा, विवेक, बल, ओज तथा तेज की प्राप्त होती है।

सूर्य नमस्कार की 12 स्थितियाँ एवं वैदिक मन्त्र इस प्रकार है-

- प्रथम स्थिति- प्रार्थना मुद्रा। प्रणाम आसन- ॐ मित्राय नमः
- द्वितीय – हस्त उतानासन – ॐ रवयै नमः
- तृतीय – पाद हस्तासन- ॐ सूर्याय नमः
- चतुर्थ – अश्व सञ्चालनासन- ॐ भानवे नमः
- पंचम – पर्वतासन – खगाय नमः
- षष्ठ – अष्टांग नमस्कार – पुष्णे नमः
- सप्तम – भुजंगासन – ॐ हिरण्यगर्भाय नमः
- अष्टम– पर्वतासन (पंचम स्थिति की पुनरावृत्ति) – ॐ मरीचयै नमः
- नवम- अश्व सञ्चालनासन (चतुर्थ स्थिति की पुनरावृत्ति) – ॐ आदित्याय नमः
- दशम- पादहस्तासन (तृतीय स्थिति की पुनरावृत्ति) – ॐ सवित्रै नमः
- एकादश – हस्त उत्तानासन (द्वितीय- स्थिति की पुनरावृत्ति) – ॐ अर्काय नमः
- द्वादश – प्रार्थना मुद्रा(प्रथम स्थिति की पुनरावृत्ति) – ॐ भास्कराय नमः

अध्याय- 6

पारम्परिक क्रीड़ाएँ

- प्राचीन गुरुकुल शिक्षा प्रणाली में व्यक्ति के बौद्धिक उन्नयन के साथ-साथ शारीरिक विकास के लिए क्रीड़ाओं को भी महत्ता प्रदान की गई थी।
- स्वस्थ रहकर ही व्यक्ति अपने जीवनपथ पर उत्तरोत्तर प्रगति कर सकता है। कुमार सम्भव में यह भी कहा गया है कि "शरीरमाद्यं खलु धर्मसाधनम्" अर्थात् शरीर ही धर्म का श्रेष्ठ साधन है।
- प्राचीन गुरुकुल में दी जाने वाली शारीरिक शिक्षा मात्र शारीरिक दक्षता के लिये ही नहीं अपितु उसका मुख्य उद्देश्य मनुष्य के आत्मबल का परिष्कार करना था। क्योंकि "नायमात्मा बलहीनेन लभ्यः" (मुण्डकोपनिषद्.2.3.4) अर्थात् बलहीन मनुष्य को आत्मा (ब्रह्म) की प्राप्ति नहीं हो सकती।
- वैदिक वाङ्मय में बल की विस्तृत व्याख्या करते हुए 33 प्रकार के बल बताए गये हैं जैसे- सामर्थ्य, तेजस्विता, सहनशक्ति, ज्ञान, शौर्य, राष्ट्रीयता, प्रताप, उत्साह, आयु, सम्पन्नता, सौंदर्य आदि। बल की साधना के उद्देश्य से गुरुकुल परम्परा में ब्रह्मचर्य पालन के साथ शारीरिक शिक्षा प्रदान की जाती थी।
- मल्लयुद्ध चार प्रकार का होता है- 1. हनुमंती 2. जाम्बुवन्ती 3. जरासंधि 4. भीमसैनी। हनुमानजी को मल्ल युद्ध का देवता माना जाता है। यदि मल्ल यौद्धा के अन्तःकरण में संयम, स्थिरता, शौर्य, सदाचार एवं बल हो, तो मल्ल युद्ध में विशेष सफलता मिलती है।
- अग्नि पुराण के अध्याय 249 से 252 तक धनुर्विद्या सम्बन्धित कई उल्लेख मिलते हैं, जैसे- यन्त्रभुक्तं, पाणिभुक्तं, युक्तसंघारित, अभुक्तं आदि। धनुर्विद्या के अभ्यास से आत्मविश्वास एवं एकाग्रता में वृद्धि होती है। परशुराम, भीष्म पितामह, गुरु द्रोणाचार्य, कर्ण, अर्जुन आदि धनुर्विद्या के प्रखर विशेषज्ञ थे।
- चौपड़ के खेल में अधिकतम चार खिलाड़ी होते हैं, जो कौड़ी अथवा पासों का प्रयोग का चार पट्टिकाओं पर किया जाता है। प्राचीनकाल में मनोरंजन एवं स्वस्थ रणनीति के विकास हेतु चौपड़ खेला जाता था। चौपड का उल्लेख महाभारत महाकाव्य में भी मिलता है।
- शतरंज खेल भी प्राचीन खेलों में से एक है। पांचवीं-छठी शताब्दी में यह खेल चतुरंग के नाम से प्रचलित था। शतरंज के खेल में आधुनिक भारत के प्रथम पुरुष ग्रैंड मास्टर विश्वनाथन आनन्द और प्रथम महिला ग्रैंड मास्टर एस. विजयलक्ष्मी हैं।
- पल्लांगुली खेल दक्षिणी भारत में महिलाओं द्वारा खेला जाने वाला प्राचीन लोकप्रिय खेल है। यह खेल दो खिलाड़ियों द्वारा खेला जाने वाला सङ्ख्यात्मक खेल है। इस खेल में चौदह गड्ढों वाला लकड़ी का एक बोर्ड होता है, जिसे पथिनालम कुई भी कहा जाता है।

- कलारी पयट्टू केरल का प्राचीन खेल आधुनिक मार्शल आर्ट का प्रतिरूप है। यह मलयाली समुदाय में अधिक लोकप्रिय है।
- **गिल्ली डंडा का** खेल दो लकड़ी की छड़ियों गिल्ली और डंडा के द्वारा खेला जाने वाला प्राचीन खेल है, जो ग्रामीण क्षेत्रों में आज भी लोकप्रिय है। क्रिकेट का विकास इस खेल से ही हुआ माना जाता है।
- वल्लमकली खेल केरल राज्य में ओणम के त्यौहार पर खेला जाने वाला लोकप्रिय खेल है। इस खेल में नावों की दौड़ होती है।
- खो-खो भारत का प्रसिद्ध पारम्परिक खेल है। खो-खो के खेल में 111 फुट लम्बा तथा 51 फुट चौड़ा मैदान होता है। यह दो टीमों वाला खेल है। प्रत्येक टीम में 12-12 खिलाड़ी होते हैं।
- मल्लखम्ब शब्द दो शब्दों मल्ल और खम्ब से मिलकर बना है। जिसका शाब्दिक अर्थ खम्बे पर कुश्ती अर्थात् इसमें खिलाड़ी चिकने खम्बे पर अपनी कला का प्रदर्शन करता है। भारतीय मूल का यह पारम्परिक खेल वर्तमान में भी विश्व के अनेक देशों में लोकप्रिय है।
- हमारा राष्ट्रीय खेल हॉकी है। हॉकी के प्रसिद्ध खिलाड़ी मेजर ध्यान चन्द् के जन्मदिवस 29 अगस्त को राष्ट्रीय खेल दिवस के रूप में मनाते हैं।
- भारतीय खेल प्राधिकरण का गठन 1982 ई. में किया गया था। भारत में खेलों के क्षेत्र में दिया जाने सबसे बड़ा पुरस्कार राजीव गाँधी खेलरत्न है।
- फिट इंडिया मूवमेंट की शुरुआत 29 अगस्त 2019 से की गई थी।

अध्याय- 7

फ्रान्स की क्रान्ति (1789 ई.-1799 ई.)

- फ्रान्स के इतिहास में 1789 ई. से 1799 ई. तक राजनीतिक और सामाजिक क्षेत्र में भारी उथल-पुथल के कारण वहाँ पर आमूलचूल परिवर्तन हुए थे। इन परिवर्तनों को ही 'फ्रान्स की राज्य क्रान्ति' के नाम से जाना जाता है।
- फ्रान्स में क्रान्ति से पूर्व राजत्व के दैवीय सिद्धान्त पर आधारित निरंकुश राजतन्त्र था। लुई चौदहवें के शासनकाल में (1643 ई.-1715 ई.) निरंकुशता अपनी पराकाष्ठा पर थी। उसने कहा- 'मैं ही राज्य हूँ'।
- लुई 15वाँ (1715-774 ई.) अत्यन्त विलासी, अदूरदर्शी और निष्क्रिय शासक था। उसने ऑस्ट्रिया के उत्तराधिकार एवं सप्तवर्षीय युद्ध में भाग लेकर देश की आर्थिक स्थिति को अत्यधिक क्षति पहुँचाई थी।
- फ्रान्स में क्रान्ति से पूर्व फ्रान्स का समाज तीन वर्गों/स्टेज में विभक्त था। प्रथम स्टेज में पादरी वर्ग, द्वितीय स्टेज में कुलीन वर्ग एवं तृतीय स्टेज में जनसाधारण वर्ग शामिल था। पादरी एवं कुलीन वर्ग को व्यापक विशेषाधिकार प्राप्त थे जबकि जनसाधारण वर्ग अधिकार विहीन था।
- किसानों के असंतोष का मुख्य कारण राज्य, चर्च तथा जमीदारों को दिए जाने वाले अनेक प्रकार के कर एवं असुविधाएँ थी। राज्य की ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की सहायता नहीं मिलती थी। अत: किसान इतने दुःखी हो चुके थे कि, वे स्वयं ही क्रान्तिकारीयों के रूप में परिवर्तित हो गए थे।
- फ्रान्स के समाज में मध्यम वर्ग (बुर्जुआ) में साहुकार, व्यापारी, शिक्षक, वकील, डॉक्टर, लेखक, कलाकार, कर्मचारी आदि सम्मिलित थे।
- फ्रान्सिसी समाज में सत्ता और सामाजिक सामर्थ्य को अभिव्यक्त करने वाली श्रेणी को 'एस्टेट' कहा जाता था।
- फ्रान्स में महिलाओं ने अपने हितों की रक्षा के लिए विभिन्न क्लबों की स्थापना की थी। 'द सोसायटी ऑफ रेवलूशनरी एण्ड रिपब्लिकन विमेन' उस समय का प्रसिद्ध क्लब था। फ्रान्स में 1946 ई. में महिलाओं को मताधिकार का अधिकार प्रदान किया था।
- फ्रान्स में चर्च द्वारा लिए जाने वाले कर को टाइद और राज्य को दिए जाने वाले कर को 'टाइल' कहा जाता था। धार्मिक जीवन को समर्पित समूह के भवनों को 'कॉन्वेंट' कहा जाता है।
- लुई 16वें ने अमेरिकी स्वतन्त्रता युद्ध में भाग लेकर फ्रान्स की आर्थिक दशा को और भी जर्जर बना दिया था। विशेषाधिकारों के कारण सम्पन्न वर्ग कर से मुक्त था तथा किसान, जो आर्थिक दृष्टि से विपन्न था, एकमात्र करदाता था।

- मॉण्टेस्क्यू (1689 ई.-1755 ई.) ने अपनी पुस्तक 'द स्पिरिट ऑफ लॉज' (The Spirit of Laws) में राजा के दैवीय अधिकारों के सिद्धान्तों का खण्डन कर, फ्रान्सिसी राजनीतिक संस्थाओं की आलोचना ही नहीं की थी अपितु उनका विकल्प भी प्रस्तुत किया था।
- वाल्टेयर (1694 ई.-1778 ई.) ने अपनी पुस्तक 'लेटर्स ऑन द इंगलिश' के माध्यम से ब्रिटेन की उदार राजनीति, धर्म और विचार की स्वतन्त्रता का चित्रण कर, उसकी तुलना पुरातन फ्रान्सिसी व्यवस्था से की थी। उसने कहा था कि 'मैं सौ चूहों के बजाय, एक शेर का शासन पसन्द करता हूँ।'
- रूसो ने अपनी पुस्तक 'एमिली', 'सोशल कॉन्ट्रैक्ट' व 'रूसोनी' के माध्यम से मानव स्वतन्त्रता की बात की थी। उसने कहा कि मनुष्य स्वतन्त्र पैदा होते हुए भी सर्वत्र जंजीरों से जकड़ा हुआ है। इन जंजीरों से मुक्ति पाने का एक ही उपाय है कि हम प्राकृतिक आदिम अवस्था की ओर लौटें।
- रूसों का मानना था कि सार्वभौम सत्ता जनता की इच्छा में निहित है, जिसे 'सामान्य इच्छा '(General Will) कहा जाता है।
- लुई 16 वें के शासनकाल में 14 जुलाई 1789 ई. को पेरिस की भीड़ ने बास्तील के किले पर आक्रमण कर दरवाजा तोड़ दिया था और कैदियों को मुक्त कर दिया था।
- राष्ट्रीय सभा ने 4 अगस्त 1789 ई. को सभी विशेषाधिकारों को समाप्त कर, संविधान का निर्माण करना शुरू किया था। राष्ट्रीय सभा को ही फ्रान्स की संविधान सभा कहा गया था।
- संविधान सभा ने 26 अगस्त 1789 ई. को मानवाधिकारों की घोषणा कर दी थी। राष्ट्रीय संविधान सभा ने चर्च की सम्पत्ति को अधिग्रहण कर, चर्च के नियन्त्रण को कम करने का प्रयास किया था। चर्च को राज्य के अधीनकर, रोमन पोप के प्रभाव से मुक्त कर दिया गया था।
- राष्ट्रीय सभा ने फ्रान्स की प्रशासनिक संरचना में परिवर्तन करते हुए सम्पूर्ण देश को 83 विभागों (Departments) में विभक्त किया था। विभागों को कैन्टन (Canton) और कम्यून (Commune) में विभाजित गया था।
- क्रान्ति के प्रथम चरण में प्रत्येक इकाई का शासन चलाने के लिए निर्वाचन परिषद होती थी, जिसका निर्वाचन सक्रिय नागरिक करते थे।
- फ्रान्स में राष्ट्रीय सभा के भङ्ग होने के पश्चात 1791 ई. में 745 सदस्यीय व्यवस्थापिका सभा (Legislative Assembly) अस्तित्व में आई थी।
- फ्रान्स की व्यवस्थापिका सभा में अनुदार एवं राजतन्त्र के समर्थक और अध्यक्ष के दायीं ओर बैठने वाले 'दक्षिणपन्थी' कहलाए थे जबकि बाईं ओर बैठने वाले 'वामपन्थी' कहलाए थे।
- वामपन्थी समूह मूलत: रेडिकल्स (परिवर्तनवादियों) का था, जो उग्र और क्रान्तिकारी थे। रेडिकल्स भी दो वर्गों में विभाजित थे- जिरोंदिस्त और जैकोबियन।

- 21 सिंतबर 1792 ई. को नेशनल कन्वेशन का प्रथम अधिवेशन हुआ था। इस अधिवेशन में जैकोबियन एवं जिरोंदिस्त दल प्रमुख थे। जैकोबियन अनुशासित और सङ्गठित दल था और पेरिस की जनता पर इनका प्रभाव था।
- सितम्बर 1792 ई. में फ्रान्सिसी सेना ने बेल्जियम पर अधिकार कर, दक्षिण में नीस और सेवॉय पर भी अधिकार कर लिया था।
- क्रान्तिकारियों ने 1792 ई. की अपनी घोषणा में कहा कि "फ्रान्स का गणतन्त्र स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्त्व की भावनाओं पर आधारित है और इन भावनाओं का प्रसार करना, वह अपना कर्तव्य समझता है। फ्रान्स के क्रान्तिकारी सिद्धान्तों को नहीं मानने वाले लोगों और देशों को फ्रान्स का शत्रु माना जाएगा।" इसी के साथ फ्रान्स में से राजतन्त्र को समाप्त कर गणतन्त्र की स्थापना कर दी गई थी।
- फ्रान्स में 14 जुलाई को स्वतन्त्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
- फ्रान्स में आतंक के राज्य की स्थापना रॉबस्पियर के नेतृत्व में की गई थी। जुलाई 1794 ई. में रॉबस्पियर को कैद कर, उसे फांसी दे दी गई थी। इस प्रकार फ्रान्स से आंतक के राज्य की समाप्ति हो गई थी।
- फ्रान्स की क्रान्ति के तृतीय चरण का समय 1794 ई. से 1799 ई. तक रहा। इसे उदार गणतन्त्र का काल भी कहा जाता है। इस काल में फ्रान्स में नेशनल कन्वेंशन ने संविधान का निर्माण कर, कार्यपालिका का उत्तरदायित्व 5 सदस्यीय निदेशक मण्डल को सौंपा था, उसे डायरेक्टरी का शासन कहते हैं।
- 1799 ई. में नेपोलियन ने डायरेक्टरी के शासन का अन्त कर फ्रान्स का प्रथम काउन्सलर (शासक) बना था। नेपोलियन ने 1804 ई. में स्वयं को सम्राट घोषित कर, तानाशाही साम्राज्यवादी शासन का प्रारम्भ किया था। नेपोलियन ने यूरोपियन देशों को जीत कर वहाँ अपने प्रतिनिधि नियुक्त कर दिए थे।
- 1815 ई. के वाटरलू के युद्ध में परास्त नेपोलियन बोनापार्ट को कारावास दिया गया था। तत्पश्चात 5 मई 1821 ई. को उसकी मृत्यु हो गई थी।
- फ्रान्सिसी क्रान्तिकारियों ने 1789 ई. में नागरिक अधिकारों की घोषणा की, जिसके अन्तर्गत कहा गया कि 'जन्म से समान पैदा होने के कारण सभी को समान अधिकार मिलने चाहिए।' यह घोषणा सिर्फ फ्रान्स के लिए नहीं अपितु संसार के उन सभी लोगों की भलाई के लिए है, जो स्वतन्त्र होना चाहते हैं।
- फ्रान्सिसी क्रान्ति के नारे स्वतन्त्रता, समानता और बन्धुत्त्व का प्रचार-प्रसार सम्पूर्ण यूरोप में हुआ था। इन तीन शब्दों ने विश्व की राजनीतिक व्यवस्था में आमूलचूल परिवर्तन का मार्ग प्रशस्त किया था।

अध्याय- 8

समाजवाद और रूसी क्रान्ति

- समाजवाद (Socialism) एक आर्थिक-सामाजिक दर्शन है। समाजवादी व्यवस्था में धन-सम्पत्ति का स्वामित्व और वितरण समाज के नियन्त्रण में रहते हैं। इस विचारधारा के अनुसार, सम्पदा का उत्पादन और वितरण समाज या राज्य के हाथों में होना चाहिए।
- ब्रिटिश राजनीतिक विचारक सी. एम. जोड ने समाजवाद को 'एक ऐसी टोपी की संज्ञा दी थी, जिसे कोई भी व्यक्ति अपने अनुसार पहन लेता है।'
- यूरोप में समाजवाद का विकास अठारहवीं और उन्नीसवीं सदी में हुआ था। आधुनिक राजनीति के अर्थ में समाजवाद को पूँजीवाद या मुक्त बाजार के सिद्धान्त के विरूद्ध देखा जाता है।
- 1815 ई. में यूरोप के अनेक देशों में बनी सरकारों से राष्ट्रवादी, उदारवादी तथा रेडिकल लोग छुटकारा चाहते थे, इसके कारण वहाँ आंदोलन होने लगे थे। फ्रान्स, इटली, जर्मनी, रूस आदि देशों में आंदोलनकारी राजतन्त्र को समाप्त कर, सभी नागरिकों को समान अधिकार वाला राज्य चाहते थे।
- समाजवादी व्यक्तिगत सम्पत्ति के विरोधी थे। वे सम्पत्ति का स्वामित्त्व सरकार के हाथों में चाहते थे। उनका मानना था कि पूँजीवादी लोग केवल अपने हितों की पूर्ति के लिए काम करते हैं। प्रमुख समाजवादी विचारकों में कालमार्क्स का नाम उल्लेखनीय है।
- कार्ल मार्क्स की सबसे प्रसिद्ध कृति 'दास कैपीटल' है। कार्ल मार्क्स का मानना था कि, जब तक पूँजीवादी सम्पत्ति का संचय करते रहेंगे, तब तक समाज में मजदूरों की स्थिति में सुधार नहीं होगा। उसका विश्वास था कि पूँजीपतियों से संघर्ष में जीत मजदूर वर्ग की होगी।
- समाजवाद का विस्तार 1870 ई. के दशक तक सम्पूर्ण यूरोप में हो चुका था। इस दौरान समाजवादियों ने अपने हितों की रक्षा के लिए द्वितीय इन्टरनेशनल नामक संस्था (1900 ई.) का गठन कर लिया था। ये संस्था निर्वाचन के समय यूरोप के देशों में समाजवादियों की सहायता करती थी।
- रूसी क्रान्ति बीसवीं सदी की सर्वाधिक महत्तवपूर्ण घटना थी, जो 1917 ई.में घटित हुई थी। इस क्रान्ति ने जार निकोलस द्वितीय के शासन का अन्त कर, सोवियत समाजवादी गणराज्य की स्थापना की थी।
- रूसी साम्राज्य की 85% आबादी कृषि पर निर्भर थी, जो उस समय में यूरोपीय देशों में सबसे अधिक थी। रूस में उद्योगों का कम विकास हुआ था और अधिकतर उद्योग निजी क्षेत्र में थे।
- रूस में 1914 ई. से पूर्व राजनीतिक पार्टियां वैधानिक नहीं थीं। 1898 ई. में कार्ल मार्क्स के विचारों को मानने वाले समाजवादियों ने 'रशियन सोशल डेमोक्रेटिक वर्कर्स पार्ट' की स्थापना की थी।
- समाजवादियों ने 1900 ई. में समाजवादी क्रान्तिकारी दल का गठन किया था। यह दल किसानों के अधिकारों की रक्षा के लिए कार्य करता था।

- रूस के मजदूरों का राजनीतिक गुट मेन्शेविक कहलाता है। मजदूरों का ऐसा दल जो सीधी क्रान्ति में विश्वास रखता था, उन्हें वाल्शेविक कहा जाता था।
- 22 जनवरी 1905 ई. में शासन के शोषण से मुक्ति के लिए प्रदर्शन कर रहे 100 मजदूरों को पुलिस और कोसैक्स ने आक्रमण कर मार दिया था। रविवार का दिन होने के कारण रूसी क्रान्ति के इतिहास में इसे 'खूनी रविवार' के नाम से जाना जाता है।
- 1914 ई. में प्रथम विश्व युद्ध प्रारम्भ हो गया था। यूरोपीय देश दो समूहों में विभक्त हो गए थे। एक समूह में जर्मनी, ऑस्ट्रिया और तुर्की थे, तो दूसरे समूह में ब्रिटेन, फ्रान्स, रूस , इटली आदि देश थे। इस युद्ध के प्रारम्भ में रूस की जनता ने जार का साथ दिया था परन्तु जार की गलत नीतियों के कारण, उसे जन समर्थन मिलना बन्द हो गया था।
- 1914 से 1916 ई. के मध्य प्रथम विश्व युद्ध में रूस की सेना की पराजय हुई थी। प्रथम विश्व युद्ध के समय रूस में बेरोजगारी, मँहगाई, उद्योग-धन्धों का विनाश और खाद्यान्न संकट उत्पन्न हो गया था, जिसके परिणामस्वरूप 1917 ई.की क्रान्ति हुई थी।
- रूस की फरवरी 1917 ई. की क्रान्ति में महिलाओं ने भाग लेते हुए हड़ताल शुरू की थी इस दिन ग्रगोरियन कलेंडर के अनुसार 8 मार्च थी। इसलिए प्रत्येक वर्ष 8 मार्च को हम अन्तार्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाते हैं। स्वशासी संगठनों को सोवियत कहा जाता था।
- लेनिन ने युद्ध समाप्ति, बैकों के राष्ट्रीयकरण, किसानों को भूमि देने आदि की मांग की थी, जिसे इतिहास में अप्रैल थीसिस के नाम से जाना जाता है।
- 24 अक्टूबर 1917 ई. को रूस में विद्रोह शुरू हुआ और वाल्शेविकों ने सरकारी कार्यालयों और विंटर पैलेस पर अधिकार कर लिया था। पेत्रोगाद में अखिल रूसी सोवियतों की बैठक हुई थी और उसने वाल्शेविकों का समर्थन किया था। दिसम्बर माह तक रूस में वाल्शेविकों का शासन हो गया था और अप्रैल थीसिस को लागू कर दिया गया था।
- 1917 ई. में संविधान सभा के चुनावों में वाल्शेविकों की हार हुई और लेनिन ने असेम्बलियों को भङ्ग कर दिया थी। अखिल रूसी सोवियत कांग्रेस को संसद का दर्जा दिया गया और रूस में एकदलीय शासन व्यवस्था प्रारम्भ होने के साथ ही रूस में साम्यवादी शासन की स्थापना हो गई थी।
- अब रूस में केन्द्रीकृत शासन व्यवस्था लागू कर पंचवर्षीय योजनाओं के द्वारा विकास कार्य प्रारम्भ हुए।

अध्याय-9

नात्सीवाद

- नात्सीवाद जर्मन तानाशाह 'एडोल्फ हिटलर' की विचारधारा थी। यह विचारधारा सरकार और जनता के बीच एक नये रिश्ते की पक्षधर थी। इस विचारधारा के अनुसार हर योजना का क्रियान्वन सरकार द्वारा हो, परन्तु वह योजना जनता और समाज की भागीदारी से चले।
- नात्सीवादी लोगों की कट्टर राष्ट्रवाद, देशप्रेम, विदेशी-विरोध, जर्मन हित, यहुदियों से नफरत आदि प्रमुख विशेषताएँ थीं। नात्सीवादी लोग यूरोप तथा जर्मनी में बुराई के लिए यहुदियों को दोषी मानते थे।
- 20वीं सदी के प्रारम्भ में शक्तिशाली राष्ट्र जर्मनी ने इंग्लैंड, फ्रान्स, रूस के विरूद्ध 1914-18 ई. तक प्रथम विश्व युद्ध लड़ा था। इस युद्ध में अमेरिका के सम्मिलित होने से जर्मनी की हार हुई थी।
- नवम्बर 1918 ई. में प्रथम विश्व युद्ध को समाप्त करने वाली वर्साय सन्धि में मध्यस्ता और करने वाले राजनेताओं को जर्मनी में नवम्बर का अपराधी कहा जाता है।
- विश्व युद्ध में अमेरीका, सोवियत संघ, ब्रिटेन और उनका सहयोग करने वाले देशों को मित्र राष्ट्र कहलाए थे। मित्र राष्ट्र के विरुद्ध लडने वाले धुरी राष्ट्र कहलाए थे, जैसे- जर्मनी, इटली, टर्की, जापान आदि।
- 1914 ई. में 'वाइमर गणराज्य' की नई शासन व्यवस्था में जर्मन संसद (राइखस्टाग) के सदस्यों के निर्वाचन के लिए सार्वभौम व्यस्क मताधिकार का प्रयोग करने लगे थे।
- वाइमर गणराज्य ने ही मित्र राष्ट्रों के साथ वर्साय की संधि (1918 ई.) में की थी, जो जर्मन हित में नहीं थी। जर्मन लोग इस संधि के लिए वाइमर गणराज्य को जिम्मेदार मानते थे।
- प्रथम विश्व युद्ध में जर्मनी की हार के पश्चात मित्र राष्ट्रों ने जर्मनी के साथ 28 जून, 1919 ई. को वर्साय की संधि की थी। इस सन्धि के द्वारा जर्मनी पर 6 अरब पौंड का जुर्माना लगाया गया था।
- जब जर्मनी में वाइमर गणराज्य की स्थापना हुई, उसी समय रूसी वाल्शेविक क्रान्ति से प्रभावित होकर जर्मनी में स्पार्टकिस्ट लीग की स्थापना हुई थी।
- वार्साय सन्धि के पश्चात आये आर्थिक संकट के निराकरण के लिए जर्मन सरकार ने अत्यधिक मुद्रा का मुद्रण किया था, जिसके कारण जर्मन मुद्रा (मार्क) का मूल्य गिर गया था।
- जर्मनी में आर्थिक संकट की घडी में अमेरीका ने जर्मनी की सहायता के लिए 'डाव्स योजना' बनाई थी, जिससे जर्मनी में कुछ समय के लिए स्थिरता रही थी।
- 1929 ई. में अमेरीका में आर्थिक महामन्दी आने के कारण जर्मनी को अमरीकी सहायता मिलनी बंद हो गई और इस महामन्दी के कारण जर्मनी में बेरोजगारी दर बढ़ गई थी।

- अडोल्फ हिटलर का जन्म 20 अप्रैल 1889 ई. में आस्ट्रिया के वान नामक स्थान पर हुआ था। 1919 ई. में हिटलर ने 'जर्मन वर्कर्स पार्टी' की सदस्यता ली और धीरे-धीरे सङ्गठन पर अपना नियन्त्रण स्थापित कर लिया था। वह एक प्रतिभावान चतुर राजनीतिज्ञ, महान वक्ता और एक वीर योद्धा था।
- 1930 ई. के महामन्दी काल में नात्सीवाद ने आंदोलन का रूप ले लिया था और नात्सी प्रोपेगेंडा के अन्तर्गत लोगों को एक बेहतर भविष्य की उम्मीद दिखाई थी। जनमत को प्रभावित करने के लिए विशेष प्रकार का प्रचार प्रोपेगैंडा कहलाता है।
- नात्सी पार्टी को जर्मन संसद राइट राइखस्टांग के 1929 ई. के निर्वाचन में मात्र 2.6% मत मिले थे, वहीं 1932 ई. के निर्वाचन में 37% मतों को प्राप्त कर नात्सी पार्टी सबसे बड़ी पार्टी बन गई थी।
- 30 जनवरी, 1933 ई. को हिटलर जर्मनी का चान्सलर बना। उसने शीघ्र ही फायर डिक्री के आदेश द्वारा प्रेस और सभा करना आदि पर प्रतिबंध लगा दिया था। हिटलर ने कम्यूनिस्टों को कंसन्ट्रेसन कैम्पों मे बंद कर, उनका दमन किया था और साम्यवादी दल को गैरकानूनी करार घोषित कर दिया था।
- जर्मन संसद को भङ्ग कर 3 मार्च, 1933 को प्रसिद्ध विशेषाधिकार अधिनियम (इनेबलिङ्ग एक्ट) पारित किया गया था। इस कानून के द्वारा जर्मनी में तानाशाही स्थापित कर दी गई थी।
- हिटलर ने जर्मनी की अर्थव्यवस्था में सुधार के लिए 'ह्यालमार शाख्त' को वित्त विभाग जिम्मेदारी दी था साथ ही सौ प्रतिशत उत्पादन, सौ प्रतिशत रोजगार का उद्देश्य को प्राप्त करने का प्रयास किया था।
- प्रेस और नागरिक स्वतन्त्रताओं को प्रतिबन्धित करने वाले कानून को फायर डिक्री कहा जाता था।
- हिटलर की साम्राज्यवादी नीति के कारण ही 1939 ई. में द्वितीय विश्व युद्ध शुरू हुआ था। युद्ध के प्रारम्भ में उसे विजय मिली परन्तु उसने 1941 ई. में सोवियत रूस पर आक्रमण कर अपनी मूर्खता साबित कर दी थी और इस युद्ध में उसकी पराजय हुई थी और हिटलर ने आत्महत्या कर ली थी।
- हिटलर चार्ल्स डार्विन व हर्बर्ट स्पेंसर से बहुत प्रभावित था। वह स्पेंसर के 'सरवाइवल ऑफ द फिटेस्ट' (अति जीविता का सिद्धान्त) को मानता था। इस सिद्धान्त के अनुसार, जो नस्ल सर्वाधिक ताकतवर है, वह जिन्दा रहेगी।
- जर्मनी में ऐसे समूह, जो श्रेणीबद्ध थे और इनकी पहचान सामुदायिक थी जैसे- सिन्ती और रोमा समुदाय आदि को जिप्सी कहते थे। नात्सी शासन व्यवस्था ने यहूदियों का व्यापक स्तर पर नर संहार किया था। अत: इसे दमन का प्रतीक माना जाता है।

अध्याय-10

विश्व युद्ध और भारत

- प्रथम विश्वयुद्ध 28 जुलाई, 1914 ई. से 11 नवम्बर, 1918 तक विश्व के अनेक देशों के मध्य परोक्ष एवं अपरोक्ष रूप से हुआ था।
- प्रथम विश्व युद्ध में मुख्य रूप से मित्र राष्ट्र (इंग्लैंड, फ्रान्स, रूस, अमेरीका, आदि) और धुरी राष्ट्र (जर्मनी, ऑस्ट्रिया, तुर्की, आदि) के मध्य हुआ था। यह युद्ध लगभग चार वर्षों तक लड़ा गया था।
- आधुनिक विश्व के इस प्रथम महायुद्ध में विश्व के 36 देशों के 6 करोड़ 50 लाख लोगों ने प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भाग लिया था तथा लगभग 1 लाख सैनिक मारे गये थे।
- 1882 ई. की जर्मनी, आस्टिया और तुर्की की त्रिपक्षीय संधि और इंग्लैंड, फ्रान्स और रूस का त्रिपक्षीय सौहार्द था, जो 1907 ई. में समाप्त हो गया था।
- प्रथम विश्व युद्ध के प्रमुख कारण जर्मनी की साम्राज्यवादी नीति, परस्पर रक्षा सहयोग औद्योगिक क्रान्ति, साम्राज्यवाद, राष्ट्रवाद, किसी प्रभावशाली अन्तार्राष्ट्रीय संस्था का न होना आदि थे। 28 जुलाई 1914 ई. में ऑस्ट्रिया के राजकुमार की सर्विया के नागरिक द्वारा हत्या महायुद्ध का तात्कालिक कारण था।
- प्रथम विश्व युद्ध के परिणामस्वरूप विश्व के अनेक देशों में लोकतन्त्र, अधिनायकवाद और साम्यवाद की स्थापना हुई थी तथा अमेरिका का विश्व में महाशक्ति के रूप में उदय हुआ था।
- प्रथम विश्वयुद्ध में लगभग 10 खरब रूपये का व्यय हुआ था। परिणामत: कई देशों की आर्थिक स्थिति बहुत अधिक कमजोर हो गई थी और विश्व के अधिकांश देशों में आर्थिक मन्दी, बेरोजगारी एवं उत्पादन में कमी हुई, जिससे मुद्रा स्फीति बढ़ गई थी।
- विश्व में प्रथम बार अन्तार्राष्ट्रीय संस्था के रूप में 1920 ई. राष्ट्रसङ्घ की स्थापना हुई थी। इस महायुद्ध का सबसे बुरा परिणाम वर्साय की सन्धि के द्वारा जर्मनी पर कड़ी शर्तें लागू करना था।
- प्रथम विश्व युद्ध में लगभग 8 लाख भारतीय सैनिकों ने भाग लिया था, उनमें से लगभग 47,746 सैनिक मारे गये और 65 हजार से अधिक घायल हुए थे।
- प्रथम विश्वयुद्ध के पश्चात ब्रिटिश सरकार ने 9200 भारतीय सैनिकों को वीरता पदक के द्वारा सम्मानित किया था। ब्रिटिश सरकार ने इस विश्वयुद्ध में शहीद हुए 74 हजार भारतीय सैनिकों की याद में 1921 ई. में 'इंडिया गेट' का निर्माण करवाया था।
- भारतीय राजा महेन्द्र प्रताप सिंह (मुरसान रियासत, हाथरस) ने 1915 ई. में भारत के बाहर अफगानिस्तान में अंग्रेजी सत्ता के विरूद्ध निर्वासित सरकार की स्थापना कर ली थी।

- ब्रिटिश सरकार द्वारा दिल्ली में 1921 ई. में इंडिया गेट की आधारशिला रखी गई थी। यह 1931 ई. में बनकर तैयार हुआ था। इंडिया गेट पर विश्वयुद्ध में शहीद हुए 13,300 सैनिकों के नाम उत्कीर्णित हैं।
- ब्रिटेन ने प्रथम विश्वयुद्ध को 'लोकतन्त्र के लिए युद्ध' नाम दिया था। उसने आधिकारिक रूप से घोषणा की थी कि यह युद्ध विश्व में लोकतन्त्र की स्थापना के लिए लड़ा जा रहा है।
- प्रथम विश्वयुद्ध समाप्त होने के पश्चात ब्रिटिश शासन ने भारत में स्वराज स्थापना के प्रस्ताव को अस्वीकृत कर, 1919 ई. में 'गवर्नमेंट ऑफ इंडिया एक्ट' लाया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध वर्ष 1939-45 ई. के मध्य होने वाला एक विश्वव्यापी संघर्ष था। इस युद्ध में लगभग 70 देशों की थल, जल और वायु सेनाओं ने भाग लिया था।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में विश्व के दो प्रमुख प्रतिद्वन्दी गुट, धुरी शक्तियाँ (जर्मनी, इटली और जापान) तथा मित्र राष्ट्र (फ्राँस, ग्रेट ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, सोवियत सङ्घ) सम्मिलित हुए थे।
- द्वितीय विश्वयुद्ध के समय पूर्ण युद्ध का मनोभाव प्रचलन में आया था क्योंकि इस युद्ध में संलिप्त महाशक्तियों ने अपनी सम्पूर्ण आर्थिक, औद्योगिक तथा वैज्ञानिक क्षमता झोंक दी थी।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में विभिन्न राष्ट्रों के लगभग 10 करोड़ सैनिकों ने भाग लिया था। इस महायुद्ध में 5 से 7 करोड़ लोगों की जानें गई थीं क्योंकि इसके महत्वपूर्ण घटनाक्रम में असैनिक नागरिकों का नरसंहार भी सम्मिलित हैं। परमाणु हथियारों का पहली बार प्रयोग किया गया था।
- द्वितीय विश्व युद्ध के प्रमुख कारण वर्साय संधि की कठोर शर्तें, आर्थिक मन्दी, तुष्टीकरण की नीति, जर्मनी और जापान में सैन्यवाद का उदय, राष्ट्र सङ्घ की विफलता,फासीवाद व नाजीवाद का उदय आदि थे। तात्कालिक कारण जर्मनी द्वारा 1 सितम्बर, 1939 ई. को पोलैंड पर आक्रमण करना था।
- जर्मनी ने रिबेंट्रोप सन्धि को निरस्त कर वर्ष 1941 ई. में रूस पर आक्रमण कर दिया था, इसे ऑपरेशन 'बारबोसा' कहा जाता है।
- अमेरिकी व्यापार प्रतिबन्धों से परेशान होकर जापान ने 7 दिसम्बर 1941 ई. को हवाई में स्थित अमेरिकी नौसेना स्थल, पर्ल हार्बर पर आक्रमण कर दिया था।
- 1942 ई. के उत्तरार्द्ध में ब्रिटिश और सोवियत सेनाओं ने उत्तरी अफ्रीका और स्टालिनग्राद में जर्मनी के विरुद्ध प्रत्युत्तरात्मक कार्यवाही की थी। जर्मनी ने फरवरी 1943 ई. में स्टालिनग्राद में सोवियत सङ्घ के समक्ष आत्मसमर्पण कर दिया था।
- मुसोलिनी को इटली के देशभक्तों द्वारा पकड़कर फाँसी दे दी गई थी। उत्तरी अफ्रीका में जर्मन और इतालवी सेनाओं ने मित्र राष्ट्रों के समक्ष 7 मई 1945 ई. आत्मसमर्पण कर दिया था।
- अमेरिका ने 6 अगस्त 1945 ई. को जापान के नगर हिरोशिमा पर तीन दिन पश्चात नागासाकी पर परमाणु बम गिरा दिया था। जिस कारण जापान ने 14 अगस्त, 1945 ई. को आत्मसमर्पण कर दिया था। जापान के आत्मसमर्पण के साथ ही द्वितीय विश्व युद्ध का अन्त हो गया था।

- 24 अक्टूबर, 1945 ई. को संयुक्त राष्ट्र सङ्घ की स्थापना की गई थी। संयुक्त राष्ट्र चार्टर मानव जाति की आशाओं और आदर्शों को सुनिश्चित करता है, जिसके आधार पर दुनिया के सभी देश स्थायी शान्ति बनाए रखने के लिये मिलकर काम कर सकते हैं।
- 14 अगस्त 1941ई. को ब्रिटेन के प्रधानमन्त्री विंस्टन चर्चिल और अमेरिकी राष्ट्रपति एफ़. डी. रूजवेल्ट की घोषणा को अटलांटिक चार्टर कहा जाता है।
- पॉट्सडैम की सन्धि के अनुसार जर्मनी और उसकी राजधानी बर्लिन को चार भागों में विभाजित कर दिया गया था। इन चारों भागों को ब्रिटेन, संयुक्त राज्य अमेरिका, फ्राँस और सोवियत सङ्घ द्वारा नियंत्रित किया जाना था। तीन पश्चिमी सहयोगियों और सोवियत सङ्घ के मध्य कई मुद्दों पर असहमति थी।
- जर्मनी के विभाजन ने विश्व को एक बार पुन: दो गुटों में विभाजित कर दिया था। एक गुट का नेतृत्त्व संयुक्त राज्य अमेरीका ने किया तो दूसरे गुट का नेतृत्त्व सोवियत सङ्घ ने किया था। इन दोनों देशों की आपसी प्रतिस्पर्धा ने विश्व शीत युद्द को जन्म दिया था।
- 1991 ई. में सोवियत रूस के विभाजन से शीत युद्ध की समाप्ति हो गई थी। 2022 ई. में रूस-यूक्रेन विवाद में यूक्रेन को अप्रत्यक्ष रूप से अमेरीकी समर्थन से फिर विश्वयुद्ध का खतरा मंडरा रहा है।
- ब्रिटेन के वुड्स सम्मेलन को आधिकारिक तौर पर संयुक्त राष्ट्र मौद्रिक और वित्तीय सम्मेलन (United Nations Monetary and Financial Conference) के रूप में जाना जाता है। जुलाई 1944 ई. 44 देशों के प्रतिनिधि इस सम्मेलन में शामिल हुए थे।
- द्वितीय विश्व युद्ध के पश्चात् युद्ध प्रभावित अर्थव्यवस्थाओं के पुनर्निर्माण एवं विकास के लिए अन्तार्राष्ट्रीय बैंक (IBRD) की स्थापना की गई थी,जिसे अब विश्व बैंक के रूप में जाना जाता है। अमेरिकी डॉलर को विश्व व्यापार के लिये आरक्षित मुद्रा के रूप में स्थापित किया गया था।
- 1943 ई. सुभाषचंद्र बोस ने जापान के सहयोग से लगभग 40,000 भारतीय सैनिकों की एक सेना गठित की थी, जिसे आजाद हिन्द फौज नाम दिया गया था।
- 1943 ई. में बङ्गाल में अकाल के कारण भुखमरी से लाखों लोगों की मौत हो गई थी।
- द्वितीय विश्वयुद्ध में 87 हजार से अधिक भारतीय सैनिक शहीद हो गए थे। सर क्लाउड आचिनलेक ने कहा था कि "यदि भारतीय सेना नहीं होती तो अंग्रेज दोनों विश्वयुद्ध नहीं जीत पाते।"

अध्याय- 11

लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली

- लोकतन्त्र दो शब्दों से मिलकर बना है- लोक+तन्त्र, लोक का अर्थ जनता और तन्त्र का अर्थ शासन से है। लोकतन्त्र का सामान्य अर्थ जनता के शासन से है।
- अब्राहम लिंकन के अनुसार- लोकतन्त्र जनता का, जनता के द्वारा और जनता के लिए शासन है।
- लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में जनता का स्थान सर्वोच्च होता है। लोकतन्त्रात्मक शासन प्रणाली को जनतन्त्र एवं प्रजातन्त्र भी कहा जाता है। लोकतन्त्र के दो प्रकार हैं- 1. प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र।
- प्रत्यक्ष लोकतन्त्र में शासन कार्यों में जनता की सीधी भागीदारी होती है। स्विट्ज़रलैंड की कुछ नगरपालिकाओं, कैंटन और संघीय राज्यों में प्रत्यक्ष लोकतन्त्र स्थापित है।
- अप्रत्यक्ष लोकतन्त्र में जनता द्वारा निर्वाचित प्रतिनिधि शासन व्यवस्था का सञ्चालन करते हैं। जनता इस शासन व्यवस्था में एक निश्चित समय के लिए अपने प्रतिनिधियों का निर्वाचन करती है।
- लोकतन्त्र में दो प्रकार की शासन प्रणालियाँ सर्वाधिक प्रसिद्ध और प्रचलित हैं- 1.अध्यक्षात्मक शासन प्रणाली 2. संसदात्मक शासन प्रणाली।
- ऐसी शासन प्रणाली जिसमें कार्यपालिका और व्यवस्थापिका पृथक-पृथक हों और एक-दूसरे को परस्पर नियन्त्रित करती हों तथा कार्यपालिका का प्रमुख वास्तविक शासन होता है, अध्यक्षीय शासन कहते हैं।
- संसदीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका, विधायिका के प्रति उत्तरदायी होती है। इस शासन प्रणाली में कार्यपालिका संवैधानिक प्रधान राष्ट्रपति होता है परन्तु उसकी शक्तियों का वास्तविक उपभोग प्रधानमन्त्री करता है इसलिए प्रधानमन्त्री को कार्यपालिका का वास्तविक प्रधान कहा जाता है।
- लोकतान्त्रिक प्रणाली में संप्रभुता राज्य के सभी नागरिकों के पास होती है इसलिए कहा जाता है कि लोकतान्त्रिक सरकार देश या राज्य के नागरिकों की सरकार होती है। अत: स्पष्ट है कि लोकतान्त्रिक व्यवस्था में संविधान की सर्वोच्चता के साथ कानून का शासन होता है।
- लोकतन्त्र में समानता का अर्थ शारीरिक, मानसिक या प्राकृतिक क्षमताओं की समानता से नहीं अपितु आर्थिक, राजनीतिक, कानूनी और सामाजिक समानता से है।
- भारतीय शासन व्यवस्था को विश्व का सबसे बड़ा लोकतन्त्र माना जाता है। भारत में संसदीय शासन प्रणाली को अपनाया गया है।
- अमेरिका में अध्यक्षीय शासन प्रणाली को अपनाया गया है।

- स्वतन्त्रता का अर्थ है कि व्यक्ति को सामुदायिक कार्यों और सरकार के निर्माण करने का स्वतन्त्र अधिकार होना चाहिए। प्रत्येक व्यक्ति के पास सरकार की आलोचना करने, विचार प्रकट करने, सङ्घ बनाने और मानव जीवन की आवश्यक स्वतन्त्रताओं को मानने का अधिकार होना चाहिए।
- लोकतान्त्रिक देशों में बिना किसी भेदभाव के देश के प्रत्येक व्यस्क नागरिक को सरकार चुनने के लिए अपना मत देने का अधिकार दिया जाता है, उसे सार्वभौम वयस्क मताधिकार कहा जाता है।
- मौलिक अधिकारों में मतदान, निर्वाचन, भाषण, विचार प्रकट करने आदि के अधिकारों के अतिरिक्त प्रेस की स्वतन्त्रता का अधिकार भी शामिल होता है।
- कानून के शासन का अर्थ है कि कोई भी अधिकारी या सङ्गठन कानून का उल्लंघन और प्रशासन के सञ्चालन में अपनी मनमानी नहीं कर सकता है। लोकतन्त्र में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधियों द्वारा बनाए गए कानून सर्वोच्च होते हैं और शासन का प्रबंध उन कानूनों के अनुसार किया जाता है।
- लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में नागरिकों को सरकार की नीतियों की आलोचना करने का अधिकार प्राप्त है। जनता की आलोचना के कारण कई बार सरकार को अपनी नीतियों में परिवर्तन करना पड़ता है।
- लोकतन्त्र या प्रजातन्त्र को प्रसिद्ध राजनीतिक विचारक 'जान स्टूअर्ट मिल' ने सर्वश्रेष्ठ शासन बताया है। जान स्टूअर्ट मिल की प्रसिद्ध पुस्तक 'रिप्रेजेंटेटिव गवर्नमेंट' है।
- हेनरी मेन ने लोकतन्त्र को अयोग्य और मंदबुद्धि लोगों का शासन कहा है। कार्लाइल ने प्रजातन्त्र को मूर्खों का शासन और संसद को बातों की दुकान कहा है।
- ऋग्वेद और अथर्ववेद में क्रमशः 40 व 9 स्थानों पर तथा ब्राह्मण ग्रंथों में अनेक स्थानों पर गणतंत्र व राष्ट्र के बारे में अनेक उदाहरण मिलते हैं।
- महाभारत के पश्चात बौद्ध काल में (450 ईसा पूर्व से 450 ई. तक) भारत में कई गणतंत्र रहे हैं। इनमें पिप्पली वन का मौर्य, कुशीनगर और काशी के मल्ल, कपिलवस्तु का शाक्य, मिथिला का विदेह और वैशाली का लिच्छवी गणराज्य प्रमुख रहे हैं।
- कौटिल्य के अर्थशास्त्र व कामन्दक आदि ग्रंथों में गणराज्य, सार्वभौम शासन विधान (ग्लोबल गवर्नेंस) और निर्वाचित प्रतिनिधि को वापस बुलाने जैसी अवधारणाएँ भी उस समय प्रचलित थीं।
- "अहमस्मि सहमान उत्तरो नाम भूम्याम्। अभिषाडस्मि विष्वाषाडाशामशां विषासहिः॥" (अथर्ववेद 12.1.54) अर्थात् मैं अपनी मातृभूमि, उसके दुःख व कष्टों के विमोचन या दुःख व कष्ट से मुक्ति के लिए स्वयं सब प्रकार के कष्ट सहने को तत्पर हूँ। वे कष्ट कैसे भी हों, कहीं से आवें और कब आवें मुझे इसकी कोई चिन्ता नहीं है।

अध्याय- 12

संविधान निर्माण और राजनीतिक संस्थाएँ

- संविधान एक विधि है, जो किसी राष्ट्र के शासन का आधार है। संविधान देश का सर्वोच्च कानून होने के कारण, नागरिकों के अधिकार, सरकार की शक्ति और उसके कार्यप्रणाली का निर्धारण करता है।
- यूरोपीय कम्पनियाँ 17-18वीं सदी में व्यापार के लिए दक्षिण अफ्रीका गईं थीं। दक्षिण अफ्रीका में बहुत बड़ी सङ्ख्या में श्वेत लोग बस गये थे और स्थानीय शासन पर अपना आधिपत्य स्थापित कर लिया था।
- श्वेत लोगों ने दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद की नीति के द्वारा, वहाँ के निवासियों को त्वचा के रंग के आधार पर श्वेत और अश्वेत में विभाजित कर दिया था। श्वेत लोग, अश्वेत लोगों को निम्न समझते थे।
- शासन की नीतियों एवं कानून के द्वारा अश्वेत लोगों का दमन किया जाता था। अश्वेत लोगों के साथ रेलगाड़ी, बस, होटल, अस्पताल, विद्यालय, सार्वजनिक शौचालय आदि में भेदभाव किया जाता था।
- नेल्सन मण्डेला के आन्दोलनों और सरकार की नीतियों के विरोध के परिणामस्वरूप 26 अप्रैल 1994 ई. को दक्षिण अफ्रीका स्वतन्त्र हो गया था।
- 18 दिसम्बर 1996 ई. को दक्षिण अफ्रीका में संविधान लागू किया गया था। दक्षिण अफ्रीकी संविधान में मानव मुल्यों एवं लोकतन्त्र की स्थापना आदि का ऐसा उल्लेख है।
- 1928 ई. में श्री मोती लाल नेहरू और कांग्रेस के नेताओं ने भारत के लिए एक संविधान लिखा था।
- भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के 1931 ई. के करांची अधिवेशन में यह प्रस्ताव आया की स्वतन्त्र भारत का संविधान कैसा होना चाहिए ? इसी अधिवेशन में सार्वभौम व्यस्क मताधिकार, समानता, अल्पसंख्यकों के अधिकारों आदि पर तो संविधान निर्माण से पूर्व ही आम सहमति बन चुकी थी।
- हमारे संविधान निर्माता फ्रान्स की क्रान्ति, अमरीका के नागरिक अधिकार, ब्रिटेन की संसदीय प्रणाली और रूस की समाजवादी क्रान्ति से प्रभावित थे। इसलिए उन्होंने इनमें से उपयोगी बातों को संविधान में स्थान दिया था।
- भारतीय संविधान सभा के निर्वाचन 6 जुलाई, 1946 ई. में हुए तथा इस सभा की पहली बैठक दिसम्बर, 1946 में हुई थी। संविधान सभा के स्थायी अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र प्रसाद थे।
- 26 नवम्बर, 1949 ई. को संविधान पारित कर इसके कुछ अंशों को लागू कर दिया गया था। 26 जनवरी, 1950 ई.को संविधान को सम्पूर्ण भारत में लागू कर दिया गया था।
- संविधान के नियम और अधिनियमों के बारे में 3 वर्ष में 114 दिन में हुई गम्भीर बहसों और प्रस्तावों को 'कांस्टीट्यूएंट असेम्बली डिबेट्स' के नाम से प्रकाशित किया गया था।

- प्रारूप समिति के सदस्यों में डॉ. भीमराव अम्बेडकर के अतिरिक्त एन. गौपाल स्वामी आयंगर, कृष्णा स्वामी अय्यर, कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी, मोहम्मद सादुल्लाह, एन. माधव राव, डी.पी. खेतान थे।
- डी.पी.खेतान के देहावसान के पश्चात 1948 ई. में टी.टी. कृष्णामचारी को प्रारूप सदस्य के रूप में मनोनीत किया गया था।
- भारत के संविधान के बारे में महात्मा गांधी ने 1922 ई.में कहा था कि 'भारतीय संविधान भारतीयों की इच्छानुसार होगा'।
- भारतीय संविधान निर्माण के समय 395 अनुच्छेद, 22 भाग और 8 अनुसूचियाँ थीं परन्तु वर्तमान में भारतीय संविधान में 470 अनुच्छेद, 25 भाग और 12 अनुसूचियां हैं।
- संविधान के अनुच्छेद 368 में संविधान संशोधन का उल्लेख किया गया है। अब तक संविधान में 127 (2021 तक) संशोधन हो चुके हैं।
- भारतीय संविधान में लोकतन्त्रिक संस्थाओं की रचना, शक्तियाँ, कार्यों और दायित्वों का उल्लेख हुआ है। संविधान, शासन के अंगों तथा नागरिकों के मध्य संबंधों को भी विनियमित करता है।
- 13 दिसंबर, 1946 ई. को पण्डित जवाहर लाल नेहरु द्वारा उद्देश्य प्रस्ताव पेश किया गया था। हमारे संविधान की प्रस्तावना (उद्देशिका) उसी पर आधारित है। संविधान की प्रस्तावना में नागरिकों के लिये राजनीतिक, आर्थिक व सामाजिक न्याय के साथ स्वतन्त्रता के सभी रूप सम्मिलित हैं।
- भारतीय संविधान की प्रस्तावना में वर्णित न्याय वैदिक वाङ्मय के न्याय सिद्धान्त से अभिप्रेरित है। ऋग्वेद में वैश्विक नियमों और कानूनों का रक्षक मित्र और वरूण को बतलाया गया है।
- अथर्ववेद में संकेत है- "ये ग्रामा यदरण्यं याः सभाः अधि भूम्याम्। ये संग्रामाः समितयस्तेषु चारु वदेम ते॥" (12.1.56) अर्थात् इस पृथ्वी पर जितने गाँव, जंगल, एवं सभाएँ हैं, अतिथियों का समूह और प्रशासकों की समितियाँ स्वतन्त्र रूप से सभी सुखद एवं सुन्दर वाणी बोलें।
- ऋग्वेद में कहा गया है, "अज्येष्ठासो अकनिष्ठास एते सं भ्रातरो वावृधुः सौभगाय। युवा पिता स्वपा रुद्र एषां सुदुघा पृश्निः सुदिना मरुद्भ्यः॥" (5.60.5) अर्थात् प्रपंच (संसार) में कोई बडा नहीं, कोई छोटा नहीं, हम सब परस्पर भाई हैं। हम सब उत्तम ऐश्वर्य प्राप्ति के लिए मिलकर प्रयत्न करते हैं।
- भारतीय संविधान में आयरलैण्ड के संविधान से नीति निर्देशक तत्व, अमेरिका के संविधान से मूल अधिकार, कनाडा के संविधान से संघात्मक शासन व्यवस्था, इंग्लैण्ड की संवैधानिक परम्पराएँ, न्याय निर्णय, संवैधानिक टीकाएँ और संविधान विशेषज्ञों के परामर्श आदि का भी प्रभाव रहा था।
- भारतीय शासनव्यवस्था में सरकार के तीन अङ्ग हैं- 1.व्यवस्थापिका 2.कार्यपालिका 3. न्यायपालिका।

- सरकार का वह अङ्ग, जो कानूनों एवं नियमों का निर्माण करता है, व्यवस्थापिका कहलाता है। हमारे देश में यह कार्य संसद करती है, जो द्विसदनीय (लोकसभा और राज्यसभा) सर्वोच्च निकाय है।
- भारतीय व्यवस्थापिका में राष्ट्रपति, लोकसभा एवं राज्यसभा को सम्मिलित किया गया है। राष्ट्रपति के पास संसद की बैठक को आहूत करने, स्थगित करने या लोकसभा को भङ्ग करने की शक्ति निहित है।
- लोकसभा में जनता द्वारा चुने हुए प्रतिनिधि होते हैं, जिनकी अधिकतम सङ्ख्या 552 होती है। लेकिन वर्तमान में निर्वाचन 543 सदस्यों का होता है। दो सदस्यों एङ्ग्लों-इंडियन समुदाय से मनोनीत किये जाते थे परन्तु 25 जनवरी 2020 ई. को सरकार ने मनोनयन की व्यवस्था को समाप्त कर दिया है।
- राज्य सभा एक स्थायी सदन है, जिसमें अधिकतम सदस्य सङ्ख्या 250 होती है, जिनमें 233 सदस्यों का निर्वाचन राज्य एवं सङ्घ शासित क्षेत्रों में से किया जाता है और 12 सदस्यों का मनोनयन राष्ट्रपति द्वारा कला, शिक्षा, खेल या विज्ञान के क्षेत्र में विशेष योग्यता रखने वाले लोगों में से किया जाता है।
- राज्य सभा के सदस्यों का निर्वाचन/मनोनयन 6 वर्ष के लिए होता है। इसके 1/3 सदस्य प्रत्येक 2 वर्ष में सेवानिवृत्त होते रहते हैं।
- कार्यपालिका सरकार का वह अङ्ग है, जो कानून को लागू कर कार्यान्वित करती है। अध्यक्षीय शासन प्रणाली में कार्यपालिका का अध्यक्ष राज्य और सरकार का प्रमुख होता है। संसदीय प्रणाली में सरकार का व्यवहारिक प्रमुख प्रधानमन्त्री होता है जबकि सवैंधानिक प्रमुख राष्ट्रपति होता है।
- संघीय कार्यपालिका में राष्ट्रपति, उपराष्ट्रपति और राष्ट्रपति को सहायता करने एवं सलाह देने के लिए प्रधानमन्त्री और उसकी मंत्रिपरिषद सम्मिलित होते हैं।
- सरकार के प्रमुख और उसके मन्त्रीमण्डल को राजनीतिक कार्यपालिका कहा जाता है। राजनीतिक कार्यपालिका निर्णयों को कार्यरूप देने वाले प्रशासनिक अधिकारियों के समूह को स्थायी कार्यपालिका कहते हैं।
- भारत में संसदीय चुनाव के बाद राष्ट्रपति द्वारा बहुमत प्राप्त दल के नेता को प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है। सामन्यत: प्रधानमन्त्री का कार्यकाल पाँच वर्ष का होता है।
- प्रधानमन्त्री और मन्त्रियों के समूह को मन्त्रीपरिषद कहते हैं। इसमें तीन प्रकार के मन्त्री होते हैं- कैबिनेट मन्त्री, राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) और राज्य मन्त्री।
- कैबिनेट मन्त्री किसी बड़े विभाग के प्रभारी होते हैं। प्राय: ये पार्टी या गठबंधन के वरिष्ठ सदस्य होते हैं। राज्य मन्त्री (स्वतन्त्र प्रभार) प्राय: छोटे विभागों के मुखिया होते हैं। प्राय: बुलाये जाने पर ही ये कैबिनेट की बैठकों में भाग लेते हैं। राज्य मन्त्री अपने कैबिनेट मन्त्रियों की सहायता करते हैं।

- भारत में मन्त्री परिषद् का शीर्ष समूह कैबिनेट कहलाता है। कैबिनेट की सहायता के लिए कैबिनेट सचिवालय होता है, जो विभिन्न विभागों में समन्वय का काम करता है।
- भारत में कार्यपालिका का प्रधान राष्ट्रपति होता है। राष्ट्रपति का निर्वाचन एक निर्वाचक मण्डल (संसद और राज्य विधान मण्डल के निर्वाचित सदस्यों) के द्वारा किया जाता है।
- राष्ट्रपति प्रधानमन्त्री की नियुक्ति करता है तथा प्रधानमन्त्री के परामर्श से अन्य मन्त्रियों, न्यायधीशों, प्रदेशों के राज्यपालों, विदेशों में राजदूतों, आदि की नियुक्ति करता है।
- भारत में न्यायपालिका के रूप में उच्चतम स्तर पर सर्वोच्च न्यायालय, राज्य स्तर पर उच्च न्यायालय, जिला स्तर पर जिला न्यायालय और स्थानीय स्तर पर स्थानीय न्यायालय हैं।
- सर्वोच्च न्यायालय का प्रमुख कार्य नागरिकों के अधिकारों और संविधान की रक्षा करना है। वह सरकार की स्वेच्छाचारिता और निरंकुशता पर नियन्त्रण करता है।
- सर्वोच्च न्यायालय नागरिकों और सरकार के मध्य, दो या दो से अधिक राज्यों के मध्य, केन्द्र व राज्य सरकारों के मध्य विवादों का समाधान करता है। यह फौजदारी और दीवानी मामलों की अन्तिम अपीलीय संस्था है।
- न्यायपालिका की स्वतन्त्रता से आशय है कि उस पर व्यवस्थापिका और कार्यपालिका का नियन्त्रण नहीं होता है।
- यदि कार्यपालिका या राज्य सरकार द्वारा बनाया गया कानून संविधान के विरूद्ध है, तो सर्वोच्च न्यायालय, न्यायिक समीक्षा कर उस कानून की वैधता की जाँच कर उसे वैध या अवैध घोषित कर सकता है।
- भारत के सर्वोच्च न्यायालय ने 1973 ई. में (केशवानन्द भारती वनाम सरकार) निर्णय दिया है कि संसद भारतीय संविधान के मूलभूत सिद्धान्तों को परिवर्तित नहीं कर सकती है।

अध्याय- 13

भारत में निर्वाचन प्रणाली

- प्राचीन भारत में सभा व समिति नाम की दो संस्थाएँ होती थीं, जो राजा के निर्वाचन का कार्य करती थीं। इन संस्थाओं के सदस्यों का भी निर्वाचन होता था।
- लोकतान्त्रिक शासन व्यवस्था में जनता द्वारा निश्चित अवधि के लिए शासन सञ्चालन के लिए प्रतिनिधि को चुनने की प्रक्रिया को निर्वाचन कहा जाता है।
- लोकतन्त्र और निर्वाचन को एक-दूसरे का पूरक माना जाता है। निर्वाचन हमें यह विकल्प देता है कि हम योग्य व्यक्ति को चुन कर सत्ता तक पहुँचाएँ, जिससे वे राष्ट्र के विकास में अपना योगदान दे सकें।
- भारत का वह प्रत्येक 18 वर्ष या उससे अधिक आयु प्राप्त नागरिक अपने मतदान की शक्ति का प्रयोग कर लोकतन्त्र के चुनाव में अपने पसन्द के उम्मीदवार को अपना मत दे सकता है।
- निर्वाचन हमें शासन व्यवस्था के बेहतर विकल्प प्रदान करता है। निर्वाचन के अभाव में समाज में निरंकुशता और अधिनायकत्व का बोलबाला हो जायेगा, जिसके परिणाम सदैव ही विध्वंसक रहे हैं।
- लोकतान्त्रिक देश में शासन करने और व्यवस्था बनाये रखने के लिए नागरिकों का सहयोग आवश्यक है, परन्तु यह संभव नहीं है की सभी नागरिक शासन कार्यों में सम्मिलित हो सकें। अत: उनके किसी प्रतिनिधि को शासन कार्य में भाग लेने का अधिकार दिया जाता है।
- नागरिकों के ऐसे सङ्गठित समूह, जो एक जैसी विचारधारा रखते हैं, 'राजनीतिक दल' कहलाते हैं। लोकतान्त्रिक शासन प्रणाली में अनेक राजनीतिक दल होते हैं और सत्ता प्राप्ति के लिए, उनके मध्य राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता का होना स्वाभाविक है।
- भारतीय लोकतन्त्र में निर्वाचन प्रक्रिया के अलग-अलग स्तर हैं। चुनावी कार्यों को सम्पन्न कराने के लिए संविधान द्वारा भारत में निर्वाचन आयोग की स्थापना 25 जनवरी 1950 ई. को हुई थी। भारत के प्रथम चुनाव आयुक्त श्री सुकुमार सेन थे। भारत में प्रथम आम चुनाव 1952 ई. में हुए थे।
- भारतीय संविधान के भाग 15 के अनु. 324 से अनु. 329 तक निर्वाचन की व्याख्या की गई है। अनु.324 के अनुसार निर्वाचनों का अधीक्षण, निर्देशन और नियन्त्रण का कार्य निर्वाचन आयोग का है।
- हमारे देश में संसदीय प्रतिनिधित्व शासन प्रणाली को अपनाया गया है इसलिए जनप्रतिनिधियों के निर्वाचन के लिए सम्पूर्ण देश को विभिन्न क्षेत्रों में विभक्त कर दिया गया है, इन्हें निर्वाचन क्षेत्र कहते हैं।
- संसदीय क्षेत्रों से निर्वाचित प्रतिनिधियों को 'सांसद' कहा जाता है। वर्तमान में हमारे देश को 543 लोकसभा क्षेत्रों में विभाजित गया है।

- प्रत्येक राज्य को विधानसभा क्षेत्रों में विभाजित किया गया है। इन क्षेत्रों से चुने हुए प्रतिनिधियों को 'विधायक' कहते हैं। राज्य में विधायकों की सङ्ख्या, वहाँ की जनसङ्ख्या के आधार पर निर्धारित होती है।
- स्थानीय शहरी स्वशासन में नगर निगम, नगर परिषद, नगरपालिका और ग्रामीण स्वशासन में जिला परिषद, पञ्चायत समिति और ग्राम पञ्चायतों को वार्डों में विभक्त किया गया है। इन निर्वाचन क्षेत्रों को सामान्य बोल-चाल की भाषा में 'सीट' भी कहा जाता है।
- संविधान निर्माताओं ने कमजोर और पिछड़े वर्गों के लिए आरक्षित निर्वाचन की व्यवस्था की थी। ऐसे निर्वाचन क्षेत्रों को 'आरक्षित निर्वाचन क्षेत्र' कहते हैं। यह आरक्षण व्यवस्था लोकसभा, राज्यसभा, विधान सभा और स्थानीय स्वशासन के सभी स्तरों पर लागू है।
- लोकतान्त्रिक निर्वाचन व्यवस्था में मतदान हेतु नागरिकों की एक सूची, निर्वाचन से पूर्व ही तैयार कर ली जाती है जिसे 'मतदाता सूची' कहा जाता हैं।
- भारतीय निर्वाचन आयोग द्वारा राजनीतिक दलों एवं प्रत्याशियों के लिए बनाई गई नियमावली को आदर्श आचार संहिता कहा जाता है। उम्मीदवार को निर्वाचन अधिकारी के समक्ष निर्वाचन के लिए भरे जाने वाले प्रपत्र को 'नामांकन पत्र' कहा जाता है।
- निर्वाचन प्रक्रिया में राजनीतिक दल के उम्मीदवारों को उनके दल का चिन्ह और स्वतन्त्र उम्मीदवारों को पहचान के लिए अलग-अलग निर्वाचन चिन्ह दिया जाता है, जिसका उद्देश्य यह होता है कि मतदाताओं को उम्मीदवार की पहचान हो सके और वे मत देते समय भ्रमित ना हो।

  राजनीतिक दलों या स्वतन्त्र उम्मीदवार अपनी विजय के
- निर्वाचन काल में राजनीतिक दलों या स्वतन्त्र उम्मीदवार अपनी विजय के उपरान्त कराये जाने वाले कार्यों के बारे में जनता के मध्य चर्चा करते हैं, इन कार्यों की सूची को 'चुनाव घोषणा पत्र' कहा जाता है। यह प्रचार कार्यक्रम मतदान होने के 48 घण्टे पहले तक किया जाता है।
- निर्वाचन प्रक्रिया में निर्वाचन आयोग सबसे पहले मतदान केंद्रों का निर्धारण करता है। मतदान केन्द्र अस्थायी रूप से गाँव या शहर के विद्यालय या सरकारी इमारतों में होते हैं।
- भारत में सर्वप्रथम इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन (E.V.M.) का प्रयोग नवम्बर 1998 के विधानसभा चुनावों में राजस्थान, मध्यप्रदेश और दिल्ली के 16 विधानसभा क्षेत्रों में किया गया था। एक इलेक्ट्रॉनिक वोटिंग मशीन में 3840 मत दर्ज किए जा सकते हैं।

अध्याय- 14

आदर्श ग्राम की परिकल्पना

- छोटी-छोटी मानव बस्तियों को ग्राम या गाँव कहते हैं। इनकी जनसङ्ख्या कुछ 100 से लेकर कुछ 1000 के मध्य होती है। अधिकांश गाँवों में लोग कृषि या कोई अन्य परम्परागत कार्य करते हैं।
- वैदिक चिन्तन में ग्राम्य व्यवस्था के अनेक दृष्टान्त मिलते हैं। गाँव की प्रशासनिक एवं सैन्य व्यवस्था के लिए उस समय 'ग्रामणी' नामक अधिकारी होता था।
- वेदों में बुनाई और कढाई करने वाली स्त्रियों को 'सिरी' तथा 'पेशस्कारी', जुलाहों को 'वाय', चरखे को 'तसर', व्यापार करने वालों को 'पणि' तथा सूदखोर को 'वेकनाट' कहते थे।
- समुद्र में विशाल नौकाओं के सञ्चालन का संकेत ऋग्वेद में है- "शतारित्रां नावमातस्थिवांसम्।" (1.116.5) क्रय-विक्रय का आधार वस्तु विनमय था।
- उस समय कृषि कार्य को उत्कृष्ट कार्य माना जाता था "सुसस्या: कृषीस्कृधि।" (शु.य 4.10) "सीरा युञ्जन्ति कवय:।" (शु.य. 12.67) अर्थात् विद्वान लोग हल जोतते हैं इसलिए हमें खेती अवश्य करनी चाहिए।
- "नम: क्षेत्रस्यपतये।" (अथर्व. 2.8.5) अर्थात्, हे खेत के स्वामी ! तुझको नमस्कार है।"कार्षीवणा अन्नविदो न विद्यया" (अथर्व. 6.116.1) अर्थात् कृषि विशेषज्ञ दूसरों के लिए अनुकरणीय होता है। "कृष्टराधिरुप जीवनीयो भवति" (अथर्व. 8.10.24) अर्थात् कृषि ही जीवन का मूल है।
- ऐसा ग्राम जिसमें उन्नत कृषि, वित्त, स्वास्थ्य, शिक्षा, परिवहन व्यवस्था के साथ-साथ मानव की मूलभूत आवश्यकताएँ आसानी से उपलब्ध होती हैं, उसे आदर्श गाँव कहा जाता है। आदर्श गाँव में औद्योगिक विकास और प्रशासनिक व्यवस्था स्थानीय स्तर पर ही उपलब्ध हो जाती है।
- गाँवों में आजीविका का मुख्य आधार कृषि होता है। गाँवों में दो प्रकार की आर्थिक गतिविधियाँ होती हैं- कृषि आधारित और गैर कृषि आधारित।
- उत्पादन में श्रम या मेहनत की आवश्यकता होती है। यह दो प्रकार का होता है- पहला शिक्षित व्यक्तियों द्वारा किया जाने वाला मानसिक श्रम और दूसरा शारीरिक श्रम।
- उत्पादन करने के लिए अनेक प्रकार की आगत (लागत) की आवश्यकता होती है। इसके अन्तर्गत दो प्रकार के मद आते हैं- i. उपकरण, मशीन और भवन ii. कच्चा माल व नकद मुद्रा। उत्पादन को उपभोग या बिक्री योग्य बनाने के लिए भूमि, श्रम, भौतिक पूँजी, ज्ञान व तकनीकी की आवश्यकता होती है।

- हेक्टेयर भूमि नापने की ईकाई होती है। 1 हेक्टेयर= 100 मीटर की भुजा वाले क्षेत्र का क्षेत्रफल या 4 बीघा के लगभग होता है। कृषक द्वारा एक वर्ष की समयावधि में किसी भूमि पर एक से अधिक फसल उत्पादन करने की विधि को 'बहुविध फसल प्रणाली' कहा जाता है।
- 1960 ई. के दशक के अन्त में हरित क्रान्ति से कृषि क्षेत्र में क्रान्तिकारी परिवर्तन हुए हैं। अब कृषि में हाइब्रिड तथा उन्नत किस्म के बीजों (H.Y.V.) का प्रयोग, सिञ्चाई के उचित प्रबन्ध, रासायनिक खाद और आधुनिक मशीनों के प्रयोग से उत्पादन में वृद्धि हुई, जिसे 'हरित क्रान्ति' कहा जाता है।
- भारत में हरित क्रान्ति लाने का श्रेय 'नारमन बोरलॉग' को है परन्तु इसका जनक एम. एस. स्वामीनाथन को माना जाता है। हरित क्रान्ति से गेहूं के उत्पादन में सर्वाधिक वृद्धि हुई थी।
- भारत में 1965-66 ई.में गेहूँ का उत्पादन 10 करोड़ टन प्रति वर्ष था वहीं 2017-18 में बढ़कर यह 97 करोड़ टन प्रतिवर्ष हो गया है।
- 1970 ई. में दूध उत्पादन के क्षेत्र में वृद्धि करने के लिए श्वेत क्रान्ति हुई। श्वेत क्रान्ति के जनक वर्गीज कुरियन है।
- जनसङ्ख्या वृद्धि और भूमि के पैतृक विभाजन के कारण कृषि भूमि में कमी हुई है। इसके अतिरिक्त बढ़ते शहरीकरण, औद्योगिक विकास आदि के कारण भी कृषि भूमि का रूपान्तरण हो गया है।
- वर्तमान में सरकार के द्वारा किसानों हित संरक्षण के लिए किसान क्रेडिट-कार्ड, पी. एम. किसान सम्मान निधि योजना (2019 ई.) आदि योजनाओं का क्रियान्वन किया गया है। सहकारी संस्थाओं के माध्यम से अल्पावधि और दीर्घावधि के लिए फसली ऋण न्यूनतम ब्याज पर प्रदान कर रही है।
- कृषि उपज के पैदा होने के पश्चात कुछ उपज को किसान अपने उपयोग के लिए रख लेता है और शेष उपज को बाजार में बेच देता है, उसे 'अधिशेष बिक्री' कहते हैं।
- गैर कृषि कार्यों में डेयरी उद्योग, लघु निर्माण उद्योग, लघु विपणन केन्द्र और परिवहन कार्य प्रमुख हैं। जिसके माध्यम से किसान अपनी आमदनी को बढ़ाते हैं।
- डेयरी उद्योग के अन्तर्गत पशु उत्पाद व दुग्ध पर आधारित उद्योग आते हैं। लघु उद्योग के अन्तर्गत गाँव में कृषि औजार, फर्नीचर, गुड बनाने, तेल निकालने के छोटे-छोटे कारखाने आते हैं।
- सांसद आदर्श ग्राम योजना (एस.ए.जी.वाई.) का शुभारम्भ 2014 ई. में किया गया था। इसका उद्देश्य प्रत्येक संसद सदस्य द्वारा दो गाँवों को 2019 तक आदर्श गाँव के रूप में विकसित करना है।
- प्रथम चरण में संसद सदस्यों द्वारा 702 ग्राम पञ्चायतों को गोद लेकर उनके विकास के लिए ठोस कदम उठाए जा रहे हैं।

अध्याय- 15

मानव संसाधन और गरीबी

- हमारे पर्यावरण में उपलब्ध प्रत्येक वस्तु संसाधन है, इन संसाधनों का उपयोग हम अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए करते हैं।
- मानव जनसङ्ख्या भी एक संसाधन है। जब मानव शिक्षा, स्वास्थ्य, और प्रशिक्षण में निवेश करता है तो, ये मानव पूँजी में परिवर्तित हो जाते हैं। इस प्रकार मानव, संसाधन के रूप में अपने उत्पादन कौशल और योग्यता से अपने देश के सकल राष्ट्रीय उत्पाद को बढ़ाने पर जोर देता है।
- जब विद्यमान जनसङ्ख्या को शिक्षा तथा स्वास्थ्य के द्वारा विकसित एवं सशक्त किया जाता है, तो इसे 'मानव पूँजी निर्माण' कहते हैं। भौतिक पूँजी की तरह ही मानव पूँजी भी प्रतिफल प्रदान करती है।
- आर्थिक क्रिया-कलापों को तीन क्षेत्रों में विभाजित गया है- प्राथमिक, द्वितीयक और तृतीयक क्षेत्र।
- प्राथमिक क्षेत्र में कृषि, वानिकी, पशुपालन, मत्स्यपालन, मुर्गीपालन, खनन आदि को सम्मिलित किया गया है। द्वितीयक क्षेत्र में विनिर्माण (प्राथमिक क्षेत्र पर आधारित) सम्मिलित है। तृतीयक क्षेत्र में व्यापार, परिवहन, सञ्चार, बैंकिंग, बीमा, शिक्षा, स्वास्थ्य, पर्यटन सेवाएँ आदि शामिल हैं।
- राष्ट्रीय आय में वृद्धि करने वाले क्रिया-कलापों को आर्थिक क्रियाएँ कहते हैं। आर्थिक क्रियायें दो प्रकार की होती हैं- 1. बाजार क्रियाएँ 2. गैर-बाजार क्रियाएँ।
- बाजार क्रियाओं में पारिश्रमिक मिलता है। सरकारी सेवा, वस्तुओं या सेवाओं का उत्पादन आदि इस क्रिया में आते हैं। गैर-बाजार क्रियाओं में स्व-उपभोग के लिए कार्य किया जाता है। इन क्रियाओं में प्राथमिक क्षेत्र के उत्पाद सम्मिलित हैं।
- जनसङ्ख्या की गुणवत्ता से देश की समृद्धि निर्धारित होती है। जनसङ्ख्या की गुणवत्ता साक्षरता दर, जीवन प्रत्याशा अथवा व्यक्ति के स्वास्थ्य और नागरिकों में कौशल विकास पर निर्भर करती है इसलिए शिक्षा और स्वास्थ्य को मानव परिसम्पत्ति माना जाता है।
- जीवन प्रत्याशा एक औसत समय का एक सांख्यिकीय उपाय है, जिसके जन्म के वर्ष, उसकी वर्तमान आयु और लिङ्ग सहित अन्य जन सांख्यिकीय कारकों के आधार पर किसी जीव के जीने की आशा है। विश्व में जापान में जीवन प्रत्याशा सबसे अधिक 83.7 वर्ष है। भारत में जीवन प्रत्याशा 71.3 वर्ष है।
- शिक्षा से मानव जीवन का विकास तो होता ही है साथ में राष्ट्र और समाज के विकास में इसका महत्त्वपूर्ण योगदान है। शिक्षा से राष्ट्रीय आय, समृद्धि, प्रशासनिक कार्य क्षमता आदि बढ़ती है।
- 2021-22 के बजट में 93,244 करोड़ रूपये आंवटित किये गए हैं।

- सरकार शिक्षा के विकास के लिए अनेक कार्य कर रही है- सर्व शिक्षा अभियान, मिड-डे-मील (1995ई.) अनिवार्य शिक्षा अधिनियम (2009 ई.) आदि प्रमुख हैं। सरकार ने शिक्षा के विस्तार के लिए दूरस्थ शिक्षा, औपचारिक, अनौपचारिक शिक्षा और सञ्चार और प्रौद्योगिकी शिक्षा पर विशेष ध्यान दिया है।
- विश्व विद्यालय अनुदान आयोग की 2019-20 ई. की वार्षिक प्रतिवेदन के अनुसार 12,22,000 प्राथमिक और उच्च प्राथमिक विद्यालय, 2,85,000 माध्यमिक एवं उच्च माध्यमिक विद्यालय, 42,343 महाविद्यालय और 1043 विश्वविद्यालय हैं।
- हमारे देश में 1951 ई. में साक्षरता 18% थी, जो वर्तमान में राष्ट्रीय सांख्यिकी कार्यालय के अनुसार 77.7% (2021ई.) में है। वर्तमान में शिक्षा के विकास के लिए सरकार ने नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (N.E.P.2020 ई.) लागू की है।
- आज हमारे देश में ई-पाठशाला, राष्ट्रीय ई-पुस्तकालय, पीएम ई-विद्या, राष्ट्रीय डिजिटल शिक्षा, वास्तुकला, विद्यांजलि, समग्र शिक्षा योजना, निपुण भारत मिशन, पी.एम. पोषण योजना आदि योजनाएँ सञ्चालित की जा रही हैं।
- वर्तमान में केन्द्र सरकार द्वारा अच्छे स्वास्थ्य के लिए आयुष्मान भारत योजना (2018 ई.), जन औषधि योजना (2008 ई.), जननी सुरक्षा योजना (2005 ई.) आदि चलाई जा रही हैं। इसके अतिरिक्त राज्य सरकारों द्वारा भी अपने-अपने क्षेत्रों में विभिन्न योजनाओं का सञ्चालन किया जा रहा है।
- वर्तमान में 2017 ई. में भारत में 1,87,505 उपस्वास्थ्य केन्द्र, प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र और सामुदायिक स्वास्थ्य केन्द्रों सहित 562 मेडिकल कालेज हैं।
- भारत की आर्थिक समीक्षा 2021-22 ई. के अनुसार पुरुषों की जीवन प्रत्याशा 68.2 वर्ष और महिलाओं की 70.7 वर्ष है। भारत में सबसे अधिक जीवन प्रत्याशा केरल और दिल्ली में 75.3 वर्ष तथा सबसे कम छत्तीसगढ में 65.2 वर्ष है।
- जब देश में कार्य करने वाली जनशक्ति अधिक होती है, किन्तु काम करने के लिए न्यूनतम निर्धारित एवं प्रचलित मजदूरी दर पर भी कार्य नहीं मिलता है तो उस अवस्था को 'बेरोजगारी' कहा जाता है। भारत में बेरोजगारी को मापने के लिए वर्ष 1973 ई. में 'भगवती समिति' का गठन किया गया था।
- किसी भी देश के आयु वर्ग में 0-15 साल, 15-65 एवं 65+ ऐसे तीन वर्ग होते हैं। इस वर्ग को, उस देश का 'श्रम बल' कहते हैं। हमारे देश में श्रम बल की आयु 15-59 वर्ष है। श्रम बल में से वे लोग जिनको रोजगार अथवा कार्य मिल जाता है, उसे 'राष्ट्र का कार्य बल' कहते हैं।
- शहरी बेरोजगारी से आशय कोई व्यक्ति शहर में काम करना चाहता हो लेकिन काम नहीं मिल पाता है।

- जब किसी व्यक्ति को वर्तमान मजदूरी दर पर काम मिल रहा है लेकिन वह अपनी इच्छा से काम नहीं करना चाहता है, तो इसे 'ऐच्छिक' बेरोजगारी कहते हैं।
- यदि अर्थव्यवस्था में मजदूर प्रचलित दर पर कार्य करने के लिए तैयार है लेकिन फिर भी उसे प्रचलित मजदूरी पर उन्हें कोई काम ना मिले तो ऐसे लोगों को 'अनैच्छिक बेरोजगार' कहा जाता है।
- जब किसी राष्ट्र में वित्तीय, भौतिक, और मानवीय संरचना कमजोर होने के कारण रोजगार का अभाव है तो, उसे 'संरचनात्मक बेरोजगारी' कहते हैं।
- जब कोई व्यक्ति स्वेच्छा से एक रोजगार को छोड़कर, दूसरे रोजगार की ओर जाता है तो, वह कुछ समय के लिए बेरोजगार रहता है, इसलिए इसे 'घर्षणात्मक बेरोजगारी' कहते हैं।
- जिस कार्य में आवश्यकता से अधिक लोग कार्य कर रहे हैं तो, उसे **'छिपी बेरोजगारी'** कहते हैं। जब अर्थव्यवस्था में आर्थिक सुस्ती, आर्थिक मन्दी, तेजी तथा आर्थिक पुनरुत्थान होता है, तो उसे 'चक्रीय बेरोजगारी' कहते हैं।
- 'शिक्षित बेरोजगारी' से आशय, शिक्षित लोगों को उनकी योग्यता के अनुरूप काम नहीं मिल पाना है। ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि का कार्य केवल सात-आठ महीने ही होता है बाकी के महीनों में कृषक को कोई काम नहीं होता है। उन महीनों में कृषक बेरोजगार होता है तो,उसे **'ग्रामीण बेरोजगारी'** कहते हैं।
- हमारे देश में वर्ष 2011-12 ई. में करीब 27 करोड़ लोग निर्धन थे अर्थात् यहाँ का हर चौथा व्यक्ति निर्धन था।
- जब किसी व्यक्ति या समुदाय के पास आर्थिक सम्पन्नता के अत्यधिक साधन होते हैं तो, उसे आर्थिक सुरक्षा प्रदान करने का भाव उत्पन्न होता है। यदि इसके विपरीत निर्धन के पास ये साधन उपलब्ध नहीं हों तो यह 'आर्थिक असुरक्षा' कहलाती है।
- वर्ष 2011-12 ई. में ग्रामीण क्षेत्र के उस पाञ्च सदस्यीय परिवार को गरीबी रेखा से नीचे माना है, जिसकी की आय 4080 रूपये/माह है और शहरी क्षेत्र के लिए यह आय 5000 रूपये प्रतिमाह निर्धारित की गई। सरकार इस आकलन में समय-समय पर परिवर्तन करती रहती है।
- नरेगा योजना को 2 अक्टूबर, 2005 को पारित किया गया था। भारत में इसकी शुरुआत सबसे पहले 2 फरवरी 2006 को आंध्र प्रदेश के बांदावाली जिले के अनंतपुर नामक गाँव में हुआ था। शुरुआत में इस योजना को लगभग 200 जिलों में लागू किया गया था। बाद में इसे 1 अप्रेल, 2008 को पूरे भारत में लागू कर दिया गया था।

अध्याय- 16

भारत में खाद्य सुरक्षा

- वैदिक वाङ्मय में अनेक प्रकार के जनकल्याण के कार्यों का उल्लेख मिलता है। उस समय भारत में जनकल्याण के अधिकांश कार्य राजाओं, महाराजाओं, श्रेष्ठियों आदि के द्वारा दिए दान से किए जाते थे।
- प्राचीन भारत में दान का स्वरूप आधुनिक काल की जनकल्याण की योजनाओं से भिन्न था परन्तु इसका मुख्य उद्देश्य जनकल्याण अर्थात् विपन्न और असहाय लोगों की आधारभूत आवश्यकताएँ, जैसे- खाद्य, आवास, वस्त्र आदि का प्रबन्ध कर, उन्हें जीवनयापन की सुरक्षा प्रदान करना था।
- ऋग्वेद में दान देने वाले व्यक्ति को ईश्वर समृद्धि प्रदान करे, ऐसी कामना की गई है, "अग्ने दा दाशुषे रयिं वीरवन्तं परीणसम्।" (3.24.5) तथा दान से कभी धन में कमी नहीं होती है,"उतो रयिः पृणतो नोप दस्यति।" (10.117.1)।
- "अहं पचाम्यहं ददामि।" (अथर्व.12.3.47) अर्थात् मैं पके हुए भोजन का दान देता हूँ। इस प्रकार उक्त वैदिक ऋचाओं से स्पष्ट होता है कि भारत में दान और दानों में भी अन्नदान का अधिक महत्व था।
- खाद्य सुरक्षा से आशय देश में सभी लोगों के लिए हमेशा भोजन की उपलब्धता, पहुँच और उसको खरीदने का सामर्थ्य से है।
- हमारे देश में उत्तर प्रदेश (पूर्वी और दक्षिणी भाग), बिहार, झारखण्ड, ओड़िशा, पश्चिमी बङ्गाल, छत्तीसगढ़, मध्यप्रदेश महाराष्ट्र आदि राज्य खाद्य सुरक्षा की दृष्टि से पिछड़े राज्य हैं।
- भारत में 1967-68 ई. में खाद्यान्न उत्पादन के क्षेत्र में हरित क्रान्ति आई, जिसके क्रान्तिकारी परिणाम निकले और हम अन्न उत्पादन के क्षेत्र में आत्मनिर्भर हो गये।
- भारत में गेहूँ उत्पादन 2019-20 ई. में 4.775 करोड़ टन तक पहुँच गया है। चावल के उत्पादन में सर्वाधिक वृद्धि करने वाले राज्य पश्चिम-बङ्गाल और उत्तर प्रदेश भी शामिल हैं।
- भारत सरकार, भारतीय खाद्य निगम के माध्यम से किसानों के अधिशेष अन्न की खरीददारी कर उसका सुरक्षित भण्डारण करती है, 'बफर स्टॉक' कहलाता है। सरकार द्वारा भण्डारित अन्न को बाजार से कम कीमत पर गरीब वर्ग को वितरण करना 'निर्गत कीमत' कहलाता है।
- भारतीय खाद्य निगम अधिप्राप्त अन्न को सरकार द्वारा स्थापित राशन की दुकान के माध्यम से गरीब वर्ग को वितरित करती है, जिसे 'सार्वजनिक वितरण प्रणाली' कहते हैं।
- जून 1997 ई. में सार्वजनिक वितरण प्रणाली के अन्तर्गत गरीबों को बी. पी. एल. (जीवन रेखा से नीचे जीवनयापन करने वाले लोग) और ए. पी. एल. (जीवन रेखा से ऊपर जीवनयापन करने वाले लोग)

श्रेणी के राशन कार्ड जारी कर खाद्यान्न उपलब्ध कराया जाने लगा है। वर्ष 2000 में वरिष्ठ नागरिकों के लिए अन्नपूर्णा योजना और अंत्योदय अन्न योजना (2002 ई.) चलाई गई है।

- सरकार ने 2013 ई. में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम बनाया था। इसके अन्तर्गत योग्यजनों को गेहूँ 2 रूपये किलो और चावल 3 रूपये किलो की दर से प्रति व्यक्ति 5 किलो प्रदान किया जा रहा है।
- हमारे देश में सार्वजनिक वितरण प्रणाली की शुरूआत 1943 ई. में बङ्गाल के अकाल के समय हुई थी। भारत सरकार ने राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम- 2013 (एन.एफ.एस.ए.) बनाया था, जिसे 5 जुलाई, 2013 ई. से लागू किया गया है।
- भारत में खाद्य सुरक्षा के लिए एकीकृत बाल विकास सेवाएँ (1975 ई.) और काम के बदले अन्न योजना (1977 ई.) का प्रारम्भ किया गया था। 2011ई. में लगभग 5.5 लाख राशन की दुकानें थीं।
- सहकारिता ऐसे व्यक्तियों का ऐच्छिक सङ्गठन है, जो समानता, स्वायत्तता तथा प्रजातान्त्रिक व्यवस्था के आधार पर सामूहिक हित के लिए कार्य करता है। सहकारिता का लक्ष्य एक–दूसरे का शोषण रोकना तथा परस्पर सहयोग से कार्य करना है।
- लोगों को दैनिक के उपयोग की वस्तुओं का वितरण, सार्वजनिक वितरण प्रणाली के बिक्री केन्द्रों और राज्य उपभोक्ता सहकारी परिसङ्घ के खुदरा बिक्री केन्द्रों से सहकारी समितियों के माध्यम से सञ्चालन किया जाता है।

परिशिष्ट - राज्य, उनकी राजधानी, जिलों की संख्या, क्षेत्रफल एवं जनसंख्या

क्रं.	राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	आंध्र प्रदेश	हैदराबाद	26	2,75,060	8,46,53,533
2.	अरुणाचल प्रदेश	ईटानगर	19	83,743	13,82,611
3.	असम	दिसपुर	35	78,438	3,11,69,272
4.	बिहार	पटना	38	94,163	10,38,04,637
5.	छत्तीसगढ़	रायपुर	32	1,36,034	2,55,40,196
6.	गोवा	पणजी	02	3,702	14,57,723
7.	गुजरात	गाँधी नगर	35	1,96,024	6,03,83,628
8.	हरियाणा	चंडीगढ़	22	44,212	2,53,53,081
9.	हिमाचल प्रदेश	शिमला	12	55,673	68,56,509
10.	झारखण्ड	राँची	24	79,714	3,29,66,238
11.	कर्नाटक	बंगलोर	30	1,91,791	6,11,30,704
12.	केरल	तिरूवनंथपुरम्	14	38,863	3,33,87,677
13.	मध्य प्रदेश	भोपाल	50	3,08,000	7,25,97,565
14.	महाराष्ट्र	मुंबई	36	3,07,713	11,23,72,972
15.	मणिपुर	इम्फाल	09	22,327	27,21,756
16.	मेघालय	शिलांग	11	22,327	29,64,007
17.	मिजोरम	आइजौल	08	21,081	10,91,014
18.	नागालैंड	कोहिमा	12	16,579	19,80,602
19.	ओडिशा	भुवनेश्वर	30	1,55,707	4,19,47,358
20.	पंजाब	चंडीगढ़	23	50,362	2,77,04,236
21.	राजस्थान	जयपुर	33	3,42,239	6,86,21,012
22.	सिक्किम	गंगटोक	04	7,096	6,07,688
23.	तमिलनाडु	चेन्नई	38	1,30,058	7,21,38,958
24.	त्रिपुरा	अगरतला	08	10,49,169	36,71,032
25.	उत्तराखण्ड	देहरादून	13	53,484	1,01,16,752
26.	उत्तरप्रदेश	लखनऊ	75	2,38,566	19,95,81,477
27.	पश्चिम बङ्गाल	कोलकाता	23	88,752	9,13,47,736
28.	तेलंगाना	हैदराबाद	33	1,14,840	3,51,93,978

क्र.	केन्द्र शासित राज्य	राजधानी	जिलों की संख्या	क्षेत्रफल वर्ग कि.मी. में	जनसंख्या
1.	अंडमान और निकोबार द्वीप समूह	पोर्ट ब्लेयर	3	8,249	3,79,944
2.	चंडीगढ़	चंडीगढ़	1	114	10,54,686
3.	दादर और नागर हवेली दमन और दीव	दमन	3	603	5,85,764
4.	जम्मू और कश्मीर	श्रीनगर	20	2,22,236	1,25,00,000
5.	राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली	दिल्ली	9	1,483	1,67,53,235
6.	लक्षद्वीप	कवरत्ती	1	32	64,429
7.	पुदुच्चेरी	पुदुच्चेरी	4	492	12,44,464
8.	लद्दाख	लेह	2	1,66,698	2,74,289

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

द्वारा सञ्चालित एवं प्रस्तावित राष्ट्रीय आदर्श वेद विद्यालय

महर्षि सान्दीपनि राष्ट्रीय वेदविद्या प्रतिष्ठान, उज्जैन (म.प्र.)

(शिक्षा मन्त्रालय, भारत सरकार)

वेदविद्या मार्ग, चिन्तामण, पो. ऑ. जवासिया, उज्जैन - ४५६००६ (म.प्र.)

Phone : (0734) 2502266, 2502254, E-mail : msrvvpujn@gmail.com, website - www.msrvvp.ac.in